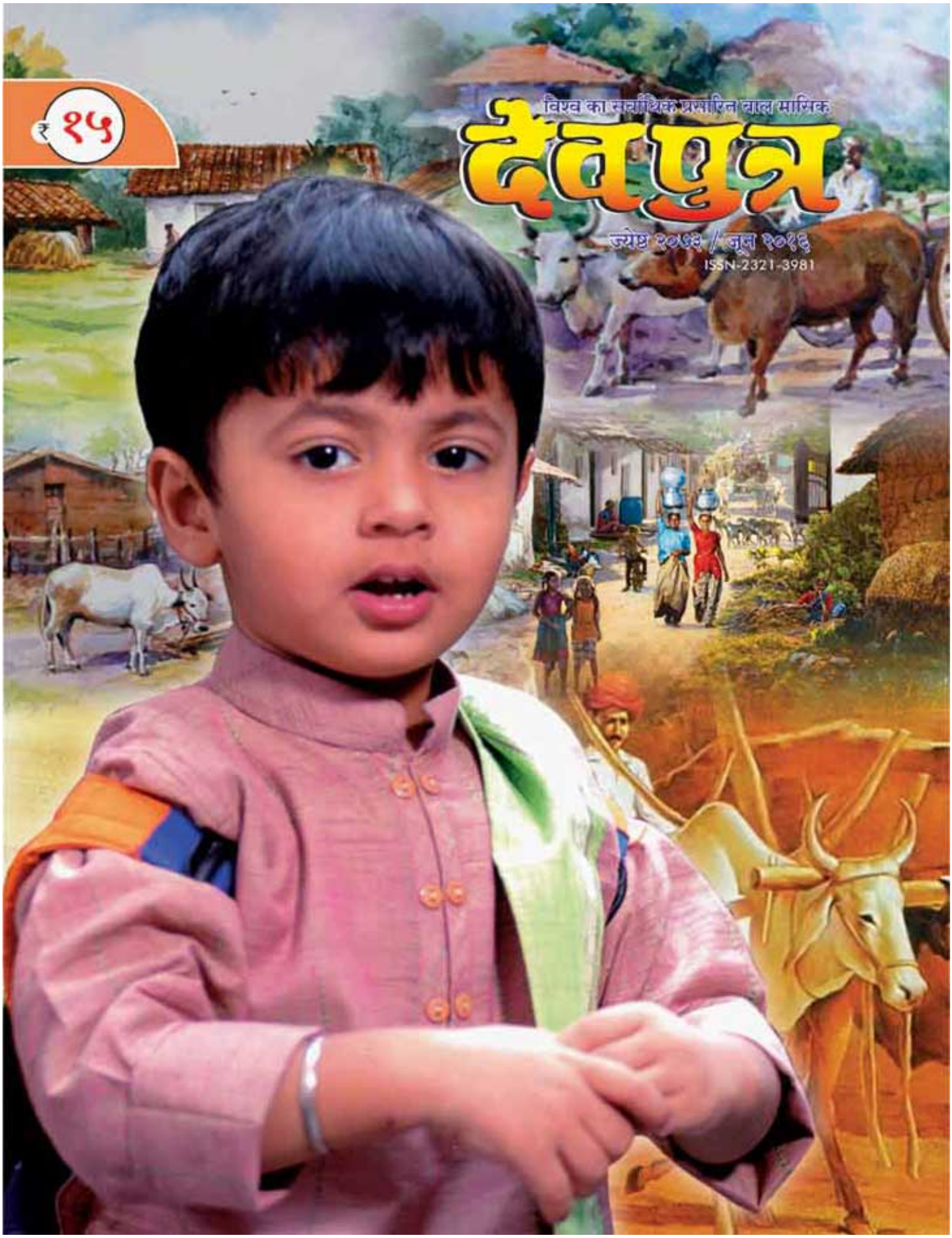
₹ १५
विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
ज्येष्ठ २०७३ / जून २०१६
ISSN-2321-3981

दृष्टि The Vision

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

सामान्य अध्ययन

निःशुल्क परिचर्चा

29 May

11:30 AM

दृष्टि पब्लिकेशन्स की अनूठी प्रस्तुतियाँ

Available at your nearest book shop

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

FOR DAILY CURRENT AFFAIRS UPDATE Visit at www.drishtiias.com

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

ज्येष्ठ २०७३ ▪ वर्ष ३६
जून २०१६ ▪ अंक १२

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

विश्व बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। हमारे युवाओं की गति भी उस तेज दौड़ में किसी से कम नहीं हैं। आकाश की ऊंचाइयों और समुद्र की गहराइयों को नाप कर उसने यह सिद्ध कर दिया है कि निश्चित रूप से २१वीं सदी उसकी है- भारत की है।

अपने देश में ही नहीं तो विश्वभर में उसके द्वारा स्थापित कीर्तिमान इसके साक्षी बन रहे हैं। दुनियां की चौधराहट का दावा करने वाले अमेरिका के राष्ट्रपति भारतीय युवाओं की इस उड़ान से भयाक्रांत हैं और अपने युवाओं को भारतीय युवाओं की इस गति को रोकने का आह्वान करने के लिये विवश हैं। उन्हें डर है कि यदि इसी गति से भारतीय युवा बढ़ते रहे तो वे उनकी अर्थव्यवस्था पर या तो छा जायेंगे या उन्होने इससे अपने को अलग कर लिया तो अमेरिका की अर्थव्यवस्था चौपट हो जायेगी। अमेरिका में ३.२२ लाख भारतीय हैं। वहां हमारे डाक्टरों का प्रतिशत ३८, सॉफ्टवेयर इंजीनियरों का ३४ और नासा में वैज्ञानिकों का ३६ प्रतिशत है।

वहां यू.एन.ओ. में डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन को पर्यावर्णीय अर्थशास्त्र के जनक के रूप में मान्यता मिली है।

धन कुबेर बिल गेट्स कहते हैं कि भारत के युवा मेरा साथ छोड़ दे तो मेरी सत्ता धराशायी हो जायेगी।

अमेरिका ही नहीं तो सम्पूर्ण विश्व में हमारे ४ लाख युवा बड़ी कम्पनियों में/संगठनों में मैनेजर या सी.ई.ओ. का दायित्व सम्हाल रहे हैं।

भारत के एक सपूत संजीव मेहता ने उस ईस्ट इण्डिया कंपनी के ५० प्रतिशत से अधिक शेयर खरीद कर अपनी मुट्ठी में कर लिया है, जिसने २०० वर्ष से अधिक समय तक हमको गुलाम बनाकर रखा था।

हमारे पास आज ५ लाख आय.टी. पेशेवर हैं जो दुनिया के ९० देशों को सॉफ्टवेयर निर्यात करते हैं। कहने का अर्थ यह है कि हम अत्यंत समर्थ पीढी के उत्तराधिकारी हैं। समय की तेज गति से कदम मिलाकर हमें इन उपलब्धियों की और आगे ले जाना है।

इस पथ का उद्देश्य नहीं हैं,
श्रांत पथिक हो रुका जाना,
किन्तु पहुंचना उस मंजिल तक
जिसके आगे राह नहीं।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

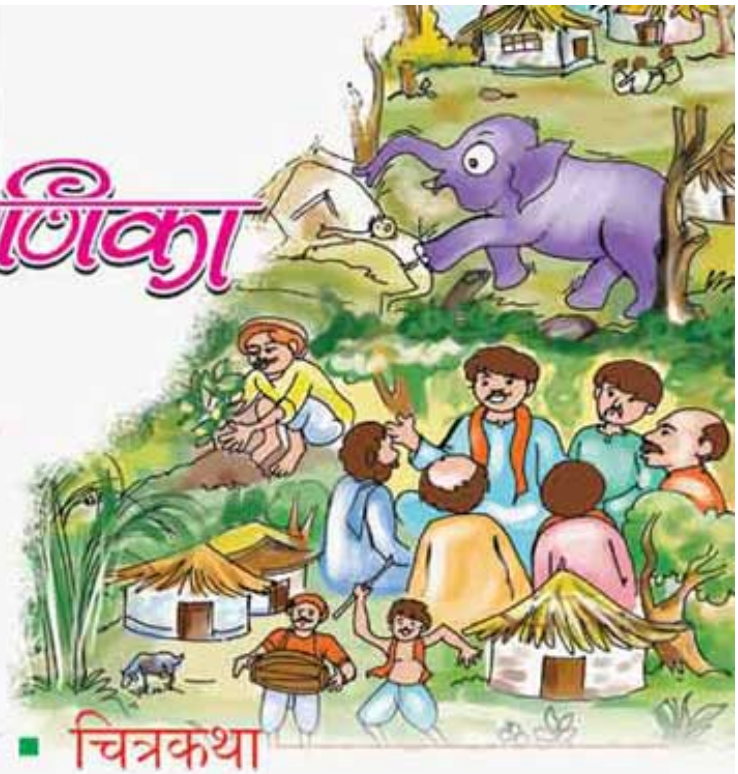

कहानी

- जीत लिया तमगा - पूनम पांडे ०५
- दादी का पीपा - सुधा भार्गव १६
- जंगल गाने लगा - अंकुश्री २२
- अनूठा उपहार - डॉ. उषा यादव ३४
- बचना है तो बदलना... - मनोहर चमोली ४०

प्रसंग

- विएतनाम में शिवाजी - कैलाश बंसल ३३

लघुकथा

- पहाड़ की भूल - मीरा जैन २१
- अपना काम - गोविंद शर्मा ४९

आलेख

- शाकाहार - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ १३

नाटक

- पेड़ पंचायत - डॉ. प्रीति प्रवीण खरे ०८

कविता

- सूरज - डॉ. पत्यूष गुलेरी ०६
- आओ योग करें - रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस' ११
- बर्गर का ठेला - शुभदा पाण्डेय १५
- राणा प्रताप - डॉ. जयंत निर्वाण २१
- वृक्ष - रामकिशोर शुक्ला २५
- गरमाती धरती - राजेन्द्र निशेश ३२
- जंगल में - कुसुम खरे 'श्रुति' ४२
- अपना पर्यावरण बचाएं - डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल ४५
- धरती का क्या होगा? - रमेशचन्द्र पंत ४९

चित्रकथा

- दादाजी का नाम - देवांशु वत्स ३७

स्तंभ

- हमारे राज्य पुष्प डॉ. परशुराम शुक्ल ३१

बाल प्रस्तुति

- पहेली पन्ना - अनुज, आस्था, नागेन्द्र १८
- कबूतर की समझदारी - आलिशा सक्सेना ४३
- चुटकुले -कुमकुम, अर्पिता, प्रतिभा अजित, प्रीति ४८

एवं ढेरों मनोरंजक व ज्ञानवर्धक सामग्री

(२१ जून अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस)

कहानी : पूनम पांडे

जीत लिया तमगा

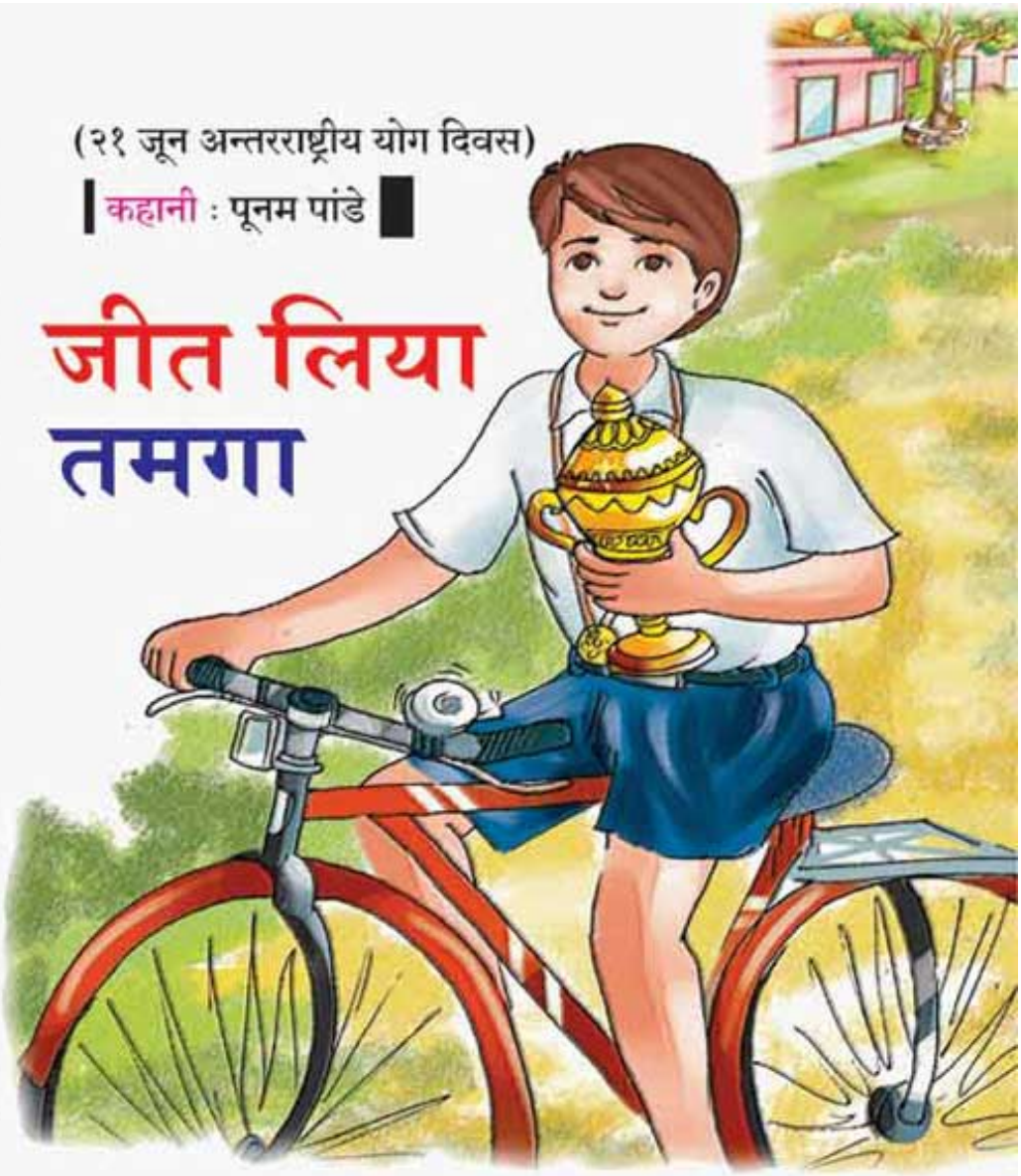

सातवीं के छात्र मृदुल को आजकल दिन-रात एक ही सपना दिखाई देता था और वह था कि उसने साइकिल रेस जीत ली है। ऐसा नहीं था कि वो सिर्फ सपने ही देख रहा था वो तो दिन-रात मेहनत कर रहा था और उन लोगों के पास भी निरंतर जाता रहता था जो लोग पिछले वर्षों में साइकिल रेस के चैम्पियन बने थे। मृदुल रहता ही ऐसी कॉलोनी में था जहाँ कोई न कोई अपने क्षेत्र का बड़ा चैम्पियन था कोई शतरंज में, कोई तैराकी में कोई टेनिस में कोई कैरम के खेल में।

मृदुल को चार वर्ष की उम्र से बढ़िया साइकिल चलानी आती थी और अब वह बारह वर्ष का था उसका मन कहता था कि यह एक काम ही शानदार है जो वह अगर मन लगाकर करे तो सफलता मिल ही जाएगी।

वैसे यह पहली बार नहीं था मृदुल पिछले तीन वर्षों से साइकिल रेस में हिस्सा ले रहा था पर उसका हौसला अभी इतना मजबूत न हो सका था लेकिन उसकी जीतने की प्रबल इच्छा उसे बार-बार अतीत की शर्मिन्दगी या पराजय से बाहर लाती और खूब मेहनत करके फिर साइकिल रेस में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करती। मृदुल ने अगले महीने होने वाली साइकिल रेस के लिए अपना नाम पंजीयन करवा ही लिया।

मृदुल अपनी पढ़ाई आदि के साथ पूरा जोर लगाकर जुट गया साइकिल रेस की तैयारी में जब भी तेज गति के अभ्यास में उसके पैर झनझनाने लगते थे वो इसे छिपाता नहीं था या तो उसी शाम माँ पिताजी से राय ले लेता या फिर अगले दिन अपने खेल विशेषज्ञ से विद्यालय में पूछ लेता। शाम को वह कालोनी के मैदान में पचास चक्कर की रेस लगाकर पूरे मन से तैयारी कर रहा था। उसकी माँ ने उसे पैरों की सहायता से की जाने वाली कुछ योग तकनीक सिखाई। पवनमुक्तासन, गरुड़आसन और सर्वांगासन करके मृदुल को बड़ा ही अच्छा महसूस

होता था और उसके पैरों में दर्द का स्तर भी कम होता गया। अब उसने योगाभ्यास करके स्वयं को मजबूत बनाने की बात मन में बिठा ली।

मृदुल ने अपने मन में कुछ और चित्र भी पक्के कर लिए थे जैसे कि वह घर जाने पर पिछली बार की तरह सुबकते हुए दुःख नहीं मनाए बल्कि किसी और के जीतने पर भी ऐसा अनुभव करेगा कि वह खुद ही विजेता है इसलिए वह पूरी खुशी के साथ विजेता को बधाई देगा। साइकिल रेस में जो भी परिणाम निकलेगा उसके लिए न तो सड़क जिम्मेदार है ना मौसम न उसका बुखार न किसी शिक्षक की डांट या फटकार बल्कि हर चीज के लिए मृदुल जिम्मेदार होगा। इस बार वह कुछ भी बुरा भला कहकर किसी को पीठ पीछे अपमानित नहीं करेगा। यह साइकिल रेस मृदुल के लिए एक अनुभव की तरह होगी इसलिए वह इसके परिणाम को लेकर कोई सदमा नहीं रखेगा क्योंकि ऐसा करके वह दूसरों की नजर में अपना अपमान करेगा।

मृदुल यही सकारात्मक विचार अपने मन में लिए हर रोज बड़े जोश और जज्बे के साथ तैयारी में लगा रहा। साइकिल रेस के दिन वह न घबराहट में था न ही चिंता में। आज का दिन भी बाकी दिनों की तरह ही सामान्य है ऐसा सोचकर वह प्रतिभागियों के साथ एक कतार में खड़ा हुआ।

नियम समय पर एक घण्टी की आवाज से प्रतियोगिता शुरु हुई और आत्मविश्वास के साथ मृदुल आगे और आगे बढ़ता गया। कमाल हो गया वो बहुत आगे था। और बाकी प्रतिभागी काफी पीछे। इस

कविता : डॉ. प्रत्यूष गुलेरी

सूरज

जल देता है, गर्मी देता
दुनिया से कुछ कभी न लेता
समता का है पाठ पढ़ाए
घर-घर में उजियारा लाए
जीव जंतु भी इस पर निर्भर
सागर, नदियां, कुएं, निर्झर
जग का तम है दूर मिटाता
बदरा में जा झट छुप जाता
जब निकले घर चमके मेरा
सूरज करता नया सवेरा।

● दाड़ी (हिमाचल प्रदेश)

बार तो जैसे खेल ही खेल में प्रतियोगिता सम्पन्न भी हो गई और सातवीं का वह विद्यार्थी जिसका नाम मृदुल था बड़े प्रसन्न मन से ट्राफी लिए साइकिल को चलाता घर के रास्ते पर था। मृदुल को सचमुच इस तैयारी ने इतना कुछ सिखाया था कि जीतने पर न वो चिल्लाया न उछला न ही कूदा फांदा। उसके इस शिष्ट और शालीन आचरण के लिए उसकी अलग से प्रशंसा होती रही। वाह! माता-पिता तो ट्रॉफी देखकर गद्‌गद थे वो आपस में बात कर रहे थे कि बेटे ने चार वर्ष तक कड़ी मेहनत की तब जाकर वह ट्रॉफी जीत पाया। मगर मृदुल को सच पता था कि असली मेहनत तो उसने सिर्फ पिछले ३० दिनों में ही की थी। ''खैर! योग की आदत तो अब मैं छोड़ूंगा नहीं।'' उसने अपने मन में फुसफुसा कर कहा।

● अजमेर (राज.)

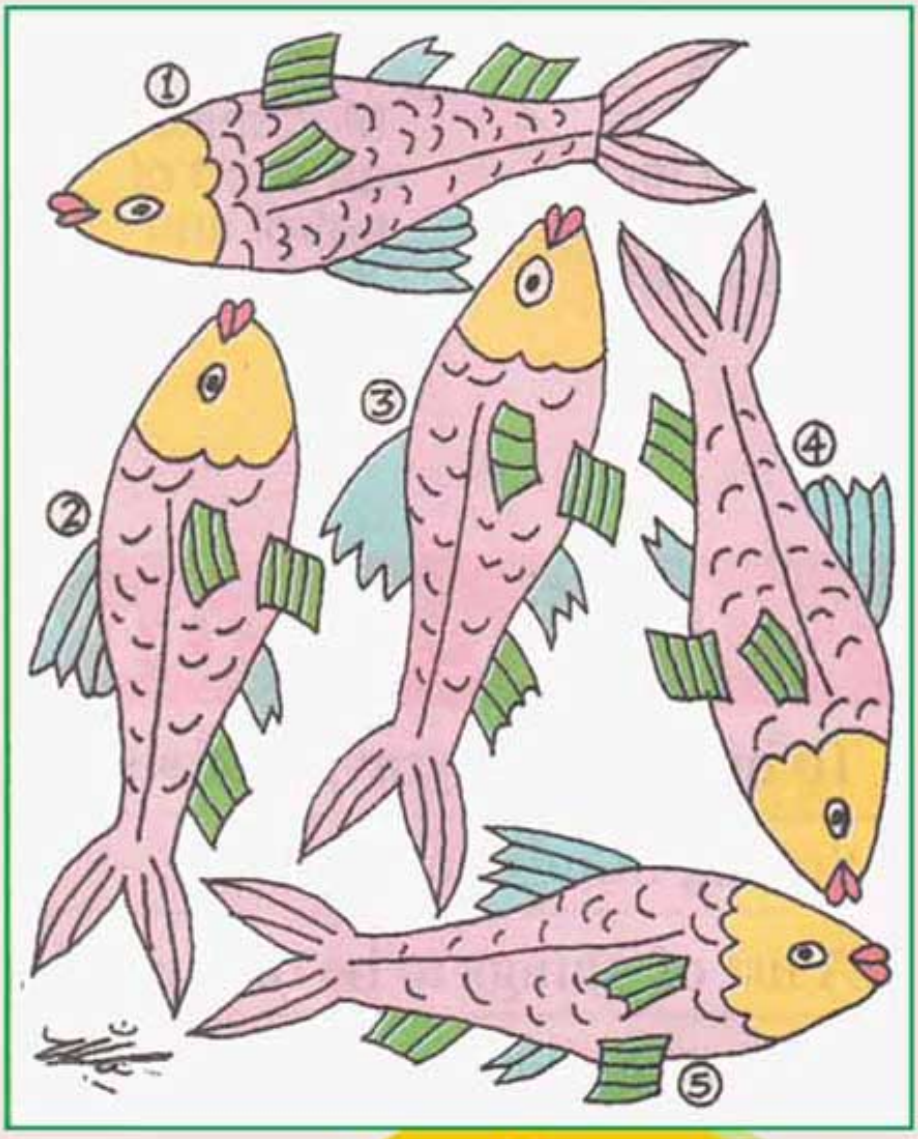

एक समान ढूंढे

चाँद मो. घोसी

यहां दिए गए मछली के पाँचों चित्रों में से कोई २ चित्र एक समान हैं। क्या आप उनका पता लगा सकते हैं?

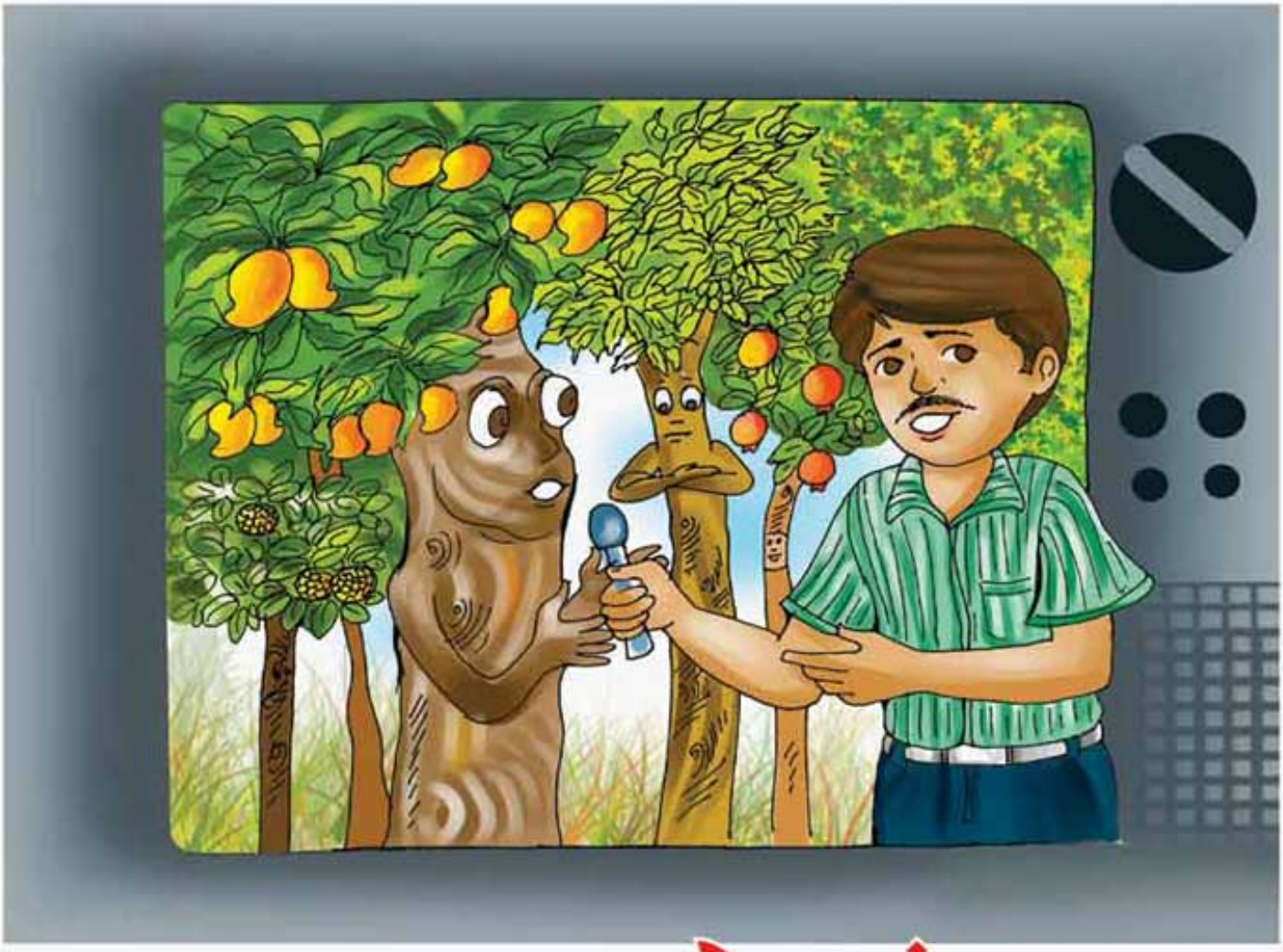

पेड़ पंचायत

कहानी : डॉ. प्रीति प्रवीण खरे

पात्र परिचय

रोली – रिपोर्टर

मन्नत – दूसरा रिपोर्टर

आशुतोष – तीसरा रिपोर्टर

आम का पेड़

जामुन का पेड़

नीम का पेड़

बादाम का पेड़

अनार का पेड़

सीताफल का पेड़

दर्शक

दृश्य

(टी.वी. चैनल रिपोर्टर रोली, मन्नत एवं आशुतोष भीड़ को सम्बोधित कर माइक पर बता रहे हैं। थोड़ी दूरी पर पेड़ों की सभा शुरु होने वाली है।)

रोली – दर्शकों! मैं रोली पांडे आप सभी को इस सभा का आँखों देखा हाल बताऊँगी। मेरे साथ कैमरे पर हैं आशुतोष तथा साथी

रिपोर्टर है मन्नत।

मन्नत – (रोली से) देखो यहाँ पेड़ों का आना जाना शुरु हो गया है।दर्शकों! मैं आपको बता दूं आज इस सभा को बुलाया है पेड़ों के राजा आम ने।

रोली– ये देखिए दर्शकों! आम के पेड़ पधार रहे हैं। आह...हा...हा.... उन्हें देखकर मेरे मुँह में पानी आ रहा है।

मन्नत – दर्शकों! मैं आपको बताना चाहूँगा आम को फलों का राजा कहते हैं। जब आम कच्चा होता है तब उसकी चटनी और आचार बनाते हैं। पकने के बाद मीठे–मीठे रसीले आम को हम सभी स्वाद लेकर खाते हैं।

रोली – आम के पीछे–पीछें नीम के हरे भरे विशाल वृक्ष का आगमन भी हो रहा है। स्वाद में कड़वा जरूर है लेकिन गुणों की खान है यह पेड़।

मन्नत – वो देखिए दर्शकों! जामुन, अनार और बादाम तीनों बातें करते हुए एक साथ आ रहे हैं।

रोली – आमंत्रित पेड़ों में एक–एक कर सभी आ चुके हैं। सबने अपना–अपना स्थान भी ग्रहण कर लिया है। लेकिन यह क्या! सभा तो शुरु हो ही नहीं रही हैं। (मन्नत से) क्या तुम्हें मालूम है अब किसका इंतजार हो रहा है।

मन्नत – हाँ रोली! सीताफल के पेड़ की प्रतीक्षा की जा रही है वे जैसे ही आएंगे सभा शुरु हो जाएगी।

रोली – दर्शको! इंतजार की घड़ियाँ समाप्त हुई सीताफल जी भी आ रहे हैं। (दर्शकों से) अरे यह क्या! ये तो काफी कमजोर नजर आ रहे हैं। लगता है इनकी तबीयत खराब है तभी ये धीरे–धीरे चल रहे हैं।

मन्नत – ये देखिए दर्शको! आम के पेड़ द्वारा सभा का अभिवादन किया जा रहा है। आगे का हाल क्यों न हम सभी उन्हीं की जुबानी सुनें।

आम– मित्रो! मैं जानता हूं आप सभी उत्सुक हैं आज की सभा क्यों अचानक बुलाए जाने का कारण जानने के लिए। (''जी हाँ!'' सभी पेड़ एक स्वर में)

अनार – (आम के पेड़ से) भैया! जल्दी से कारण बताओ और सभा समाप्त करो। मैं ज्यादा देर रुक नहीं पाऊँगा। मेरी तबीयत ठीक नहीं हैं।

बादाम – (बीच में टोकते हुए) भैया! इन दिनों मैं भी कुछ कमजोरी महसूस कर रहा हूँ। (बाकी पेड़ भी आपस में बात करने लगते हैं।)

आम– कृपया शांत रहिए, शांत रहिए। मैं आपकी इन्हीं समस्याओं को लेकर चिंतित हूँ। इसीलिए मैंने आज ये सभा बुलाई है।

सीताफल – भैया! नेकी और पूछ पूछ! सभा शुरू कीजिए।

आम– देखिए मित्रो! मैं आप सबकी दशा से भलीं भाँति परिचित हूँ मुझे आज भी याद है वो दिन जब हम सभी बगिया में हँसी–खुशी जीवन जी रहे थे। लेकिन आजकल मनुष्यों का व्यवहार हमारे प्रति उदासीन हो गया है। वे आए दिन अपने स्वार्थ के लिए हमारा शोषण कर रहे हैं।

बादाम – परिणामस्वरूप हम कमजोर हो रहे हैं।

जामुन–मनुष्य कभी हमारे हरे भरे तने को काट देते हैं तो फल तोड़ते समय हमें घायल कर देते हैं।

अनार – भैया! आजकल तो मुझे भरपूर पानी भी नहीं मिल पा रहा है।

नीम – रोगों से लड़ने के लिए औषधि भी देते हैं।

अनार – उन्हें हम सबसे महत्वपूर्ण चीज ऑक्सीजन देते हैं, जो कि उनके लिए प्राणवायु का कार्य करती है। उनके द्वारा छोड़े गए कार्बन डाय आक्साइड को हम ही तो ग्रहण करते हैं।

जामुन– अनार! हम हमारे द्वारा दिए गए सामानों की सूची बनाए तो इस सभा का समय भी कम पड़ जाएगा।

नीम – (जामुन के पेड़ का समर्थन करते हुए) सही कहा आपने जामुन जी!

सीताफल– इतने लाभकारी हैं हम फिर भी ये नासमझ मनुष्य हमें चोट पहुँचा रहे हैं, नष्ट करने पर तुले हैं। नित नए ढंग से वे हमारा दोहन और शोषण कर रहे हैं।

अनार – इसमें उपलब्ध वस्तुओं का सेवन तो वह अधिकारपूर्वक करना चाहते हैं, लेकिन बदले में उन्हें देना कुछ नहीं आता है। (सभी आपस में एक स्वर में– ''लेकिन हम करें तो कया करें?'')

आम– मित्रो! हम चाहे तो बहुत कुछ कर सकते हैं।

नीम – वो कैसे?

आम– यदि हम सब ठान लें तो संपूर्ण मानव जाति को दिन में तारे दिखा सकते हैं।

जामुन – लेकिन भैया हमें तो कुछ सूझ नहीं रहा है, आप ही राह दिखाइए।

आम– मित्रो! आज जैसे मनुष्य हमारे प्रति उदासीन हो गए है वैसे हमें भी इनके प्रति उदासीन होना पड़ेगा। उन्हें आसानी से सारी चीजें उपलब्ध हो रही हैं, यदि उन्हें ये चीजें नहीं मिलेगी तो उनकी बुद्धि ठिकाने आ जाएगी। (सभी पेड़ एक साथ आम के पेड़ को स्वीकृति देते हैं।)

सभी पेड़ – आज की सभा का परिणाम आ चुका है। पेड़ों ने मनुष्यों को सबक सिखाने की ठान ली है। उन्होंने आक्सीजन, फल–फूल, लकड़ी, औषधि, अनाज, साग–सब्जी आदि महत्वपूर्ण चीजें देने से इंकार कर दिया है।

मन्नत – दर्शको! सारे पेड़ अपने इस फैसले पर अड़े हुए हैं। अब आप ही बताइए हम सभी इनके बिना कैसे जीवित रह पाएंगे। (बोलते–बोलते मन्नत का दम घुटने लगता है।)

रोली – दर्शको! यदि अब भी हम सभी नहीं जागे तो इसके परिणाम और भी भयावह हो सकते हैं। उन्होंने तो फैसला कर लिया है। बस अब जागने, सोचने और समझने की बारी हमारी है। दर्शको! यदि आप पेड़ों के संरक्षण संवर्धन एवं हित में फैसला ले रहे हैं तो एक स्वर में अपनी स्वीकृति दे। जो दर्शक इस समय हमारे इस कार्यक्रम से सीधे जुड़े हैं वे अपनी राय हमारे टोल फ्री नंबर्स पर तुरंत प्रेषित करें।

दर्शक – (एक स्वर में चिल्लाते हैं) हम सभी पेड़ों की रक्षा करेंगे, उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाएंगे हम सदैव पेड़ों के हितों के बारे में सोचेगे। हम अपने स्वार्थ के लिए पेड़ों को नहीं काटेंगे। हम अधिक से अधिक पेड़ लगाएंगे। पेड़ों में भी जीवन है ये संदेश जन–जन में पहुँचाएंगे।

रोली – जो लोग टी.वी. के माध्यम से हमसे जुड़े है उनकी भी यही राय है और वे भी यहां मौजूद दर्शकों की राय से पूर्णतः सहमत हैं। (रोली आम के पेड़ से मनुष्यों ने अपनी गलती मान ली है। अब आप भी गुस्सा थूक दीजिए।)

आम– आखिर हम सभी पेड़ भी तो मनुष्यों का भला ही चाहते हैं। देखिए हमारा और आपका तो जन्म जन्मांतर का साथ रहा है। हमें बड़े दुःख और मजबूरी में ये कदम उठाना पड़ा।

दर्शक– तो क्या आप हमें माफ नहीं करेंगे? हमें सुधरने का एक मौका नहीं देंगे?

रोली – दर्शको! निराश होने की अवश्यकता नहीं है पेड़ों के खिले–खिले चेहरे और झूमती डालियाँ इस बात की प्रतीक है कि उन्होंने हम सभी मनुष्यों को माफ कर दिया है।

मन्नत – दर्शको! मेरी उखड़ती साँस भी वापस आ गई है जो इस बात का सबूत है कि पेड़ों ने हमें माफ कर सुधरने का एक मौका और दिया है।

रोली – दर्शको! आज की ये सभा एक सकारात्मक मोड़ पर समाप्त होती है। अगले कार्यक्रम को लेकर मैं और मन्नत कैमरामेन आशुतोष के साथ आपसे विदा लेते हैं।

(पर्दा गिरता है।)

आओ योग करें

कविता : रूद्रप्रकाश गुप्त 'सरस'

भाई अपने तन से मन से, दूर कुरोग करें।
आओ योग करें। आओ योग करें।।
स्वास्थ्य हमारा अच्छा है तो, सारा कुछ है अच्छा।
रोग ग्रसित अब नहीं एक भी, हो भारत का बच्चा।।
सूर्योदय से पहले उठकर, निपटे नित्य क्रिया।
सदा निरोगी काया जिसकी, जीवन वही जिया।।
उदाहरण कोई बन जाए, वह उद्योग करें।।
आओ योग करें। आओ योग करें।।

साँसों का भरना-निकालना, प्राणायाम हुआ।
अपने दिल-दिमाग का भाई, यह व्यायाम हुआ।।
किया भ्रामरी और भस्त्रिका, शुचि अनुलोम विलोम।।
सुन्दर है कपाल की भाती, पुलक उठे हर रोम।।
साँस-साँस द्वारा ईश्वर से, हम संयोग करें।।
आओ योग करें। आओ योग करें।।

सभी शक्तियों का यह तन है, सुन्दर एक खजाना।
यौगिक क्रिया-कलापों द्वारा, सक्रिय इन्हें बनाना।
फल-मेवा-पकवान दूध-घी, सब कुछ मिला प्रकृति से।
हमने निज खाना-पीना ही, किया विकृत दुर्मति से।।
ज्ञान और अपने विवेक से, हम सब भोग करें।।
आओ योग करें। आओ योग करें।।

पानी और हवा दूषित हो, कुछ न करें ऐसा हम।
चलें संभल कर थोड़ा तो यह, दुनियाँ बड़ी मनोरम।।
सुख से जिएँ और सुख से ही, हम जीने दें सबको।
वेद पुराण शास्त्र सारे ही, यह बतलाते हमको।।
ईश प्रदत्त शक्ति-साधन का, हम उपयोग करें।।
आओ योग करें। आओ योग करें।।

• हरदोई (उ.प्र.)

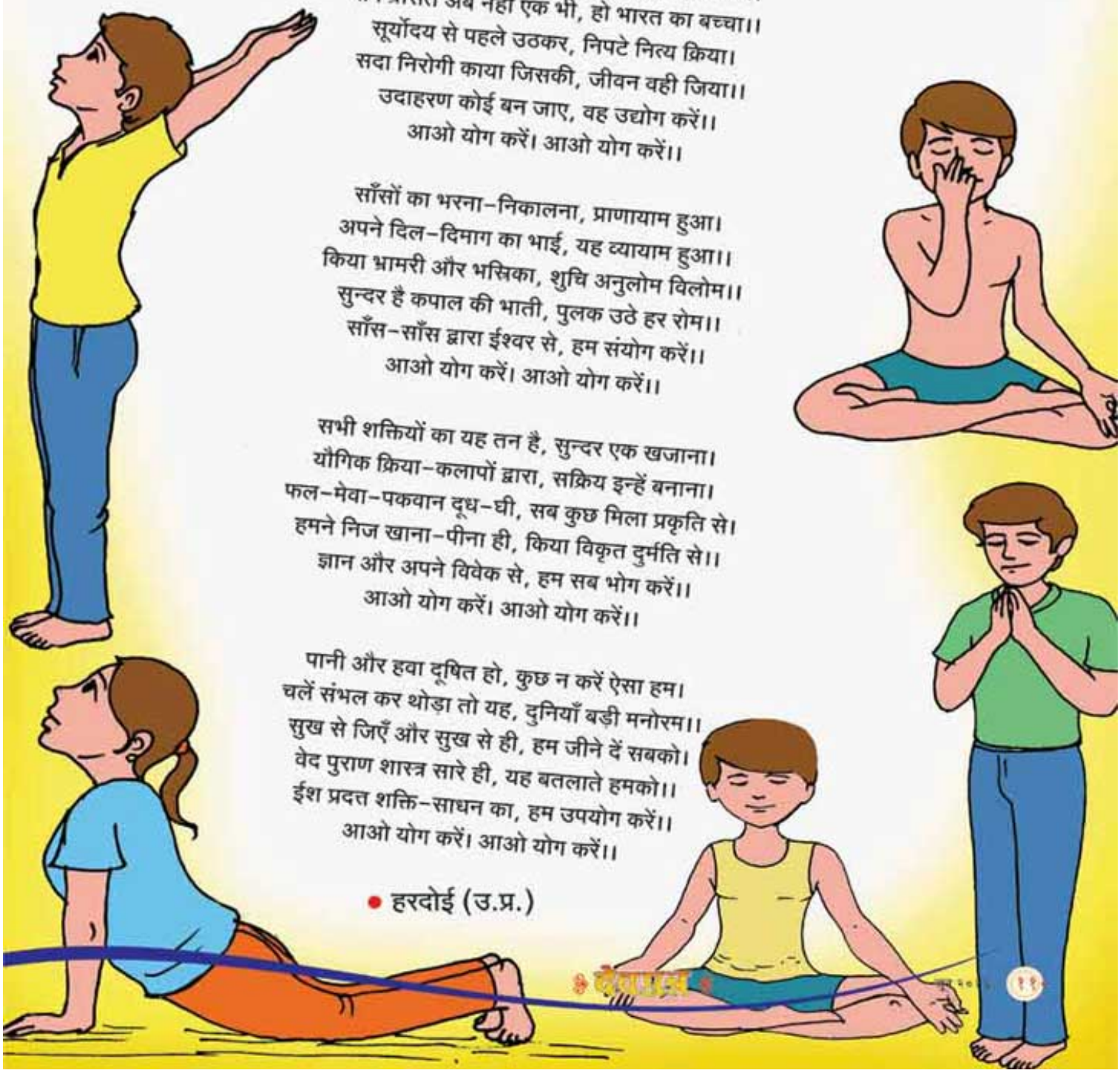

देवपुत्र प्रश्नमंच?

(१) महाराणा प्रताप के स्वामीभक्त मंत्री कौन थे जिनने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति राष्ट्रहित में राणाप्रताप को अर्पित कर दी थी।
(अ) बीरबल
(ब) भामाशाह
(स) टोडरमल

(२) प्रसिद्ध हल्दीघाटी किस नदी के तट पर है?
(अ) कावेरी
(ब) सतलज
(स) बनास

(३) महाराणा प्रताप का जन्म सन है?
(अ) १५४०
(ब) १६८०
(स) १५७६

(४) छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक किस सन में हुआ?
(अ) १६३०
(ब) १६७४
(स) १६८०

(५) शिवाजी की राजधानी कहाँ बनी?
(अ) राजगढ़
(ब) रायगढ़
(स) प्रतापगढ़

(६) शिवाजी ने प्रमुख रूप से किस मुगल शासक को चुनौती दी ?
(अ) बाबर
(ब) अकबर
(स) औरंगजेब

(७) झांसी की रानी का जन्म हुआ?
(अ) १८३५
(ब) १६३०
(सा) १९४७

(८) रानी लक्ष्मी का अंतिम संघर्ष किस अंग्रेज से हुआ?
(अ) वॉकर
(ब) ह्यूरोज
(स) हड़सन

(९) जलियावाला बाग के अपराधी जनरल डायर को सजा देने वाला वीर शहीद कौन था?
(अ) भगतसिंह
(ब) वीर सावरकर
(स) ऊधमसिंह

(१०) डायर को यह दण्ड कहाँ मिला?
(अ) लंदन
(ब) अन्दमान
(स) तिहाड़

(उत्तर इसी अंक में।)

(शाकाहार दिवसः १७ जून)

आलेख : डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

शाकाहार

अभी कैलिफोर्निया सिथति लोमालिंडा विश्वविद्यालय के अध्ययन में पता चला है कि शाकाहार करने वालों का रक्तचाप और कैलोस्ट्रोल स्तर नियंत्रण में रहता है जो उन्हें लम्बी उम्र का उपहार देता है। अध्ययन के अनुसार शाकाहारी अधिक जीते ही नहीं वरन उसमें शराब और सिगरेट की बुरी लत भी अपेक्षाकृत कम होती है। वस्तुतः शाकाहार में ही उद्धार है। यह मैं नहीं कह रही हूं वरन नई दिल्ली का समाचार पत्र ३० अगस्त २०१२ का एक आलेख कह रहा है। उसका शीर्षक है– **क्या शाकाहार में ही है उद्धार?** अब ब्रिटेन जैसे देश में शाकाहारी व्यंजन मिल जाते हैं। पर्यावरण के प्रति जागरुकता के कारण शाकाहार को एक नया बल मिला है। दुनिया के कुछ बड़े वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि खाद्य संकट को एक ही सूरत में टाला जा सकता है और वह है कि अगर लोग अगले ४० वर्षों में शाकाहारी भोजन को अपना लें। पेड़ पौधों पर आधारित भोजन पद्धति की ओर बढ़ने के सिवा और कोई चारा नहीं है। स्टॉक होम इण्टरनेशनल वाटर इंस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट पर बताती है कि दुनिया की एक तिहाई सिंचित भूमि का इस्तेमाल मनुष्यों के लिए खाद्यान्य पैदा करने के लिए नहीं वरन् पशुओं के लिए चारा पैदा करने में हो रहा है। मांसाहारी भोजन के उत्पादन के मुकाबले शाकाहारी भोजन पैदा करने में पानी का प्रयोग पांच से दस गुना तक कम होता है। पर्यावरण और स्वास्थ्य की दृष्टि से देखा जाए तो मीट और डेयरी उत्पादों के उपभोग में तेजी से कटौती करने की जरूरत है। कुछ बड़े लोगों के पास इतना पैसा है कि वे अपनी हिस्सेदारी से कहीं ज्यादा भोजन, ईंधन, पानी तथा अन्य संसाधनों का उपयोग करते हैं अर्थात् बरबाद करते हैं। सोचा जाए तो जब एक व्यक्ति दो से पांच लोगों की आवश्यकता के खाने को खाता तथा बरबाद करता है तो प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उत्पादन को बढ़ाने का कोई अर्थ नहीं है। समस्या उचित बंटवारे की है, आबादी के आंकड़े की नहीं। स्पष्ट है कि पशु उत्पादों के जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल का खतरा हमारी धरती पर मंडरा रहा है। मानव का अस्तित्व भी खतरे में है। इसके लिए हमें विश्व अर्थव्यवस्था में बदलाव लाना होगा।

मेरे विचार से हमारा भारतीय शाकाहारी स्वभाव इतना श्रेष्ठ है कि उससे इस समस्या का हल निकाला जा सकता है। भारतीय लोगों में आधे से अधिक शाकाहारी हैं। कई जातियों में तो मांस खाना अधर्म माना जाता है। ऐसे घर के बालक भी मांसाहार से घृणा करते हैं। इसीलिए मांसाहारियों का काम चल रहा है। संख्या के हिसाब से यदि सभी लोग मांसाहारी होंगे तो सभी निरीह

पशुओं पर संकट के बादल छा जाएंगे। फिर पशु पक्षी विहीन विश्व कैसा होगा?

गाय हमारी माता है। उसका दूध अमृत है तो हमें उसकी सेवा करके दूध पीना चाहिए। न कि उसको काट कर मांस का निर्यात करना चाहिए। धिक्कार है उन पर जो इसमें तनिक भी भागीदार होते हैं। नैतिकता के नाते न सही पर उपयोगिता के नाते भी भविष्य में सभी जनों को शाकाहारी होना होगा। बच्चे यदि अभी से इस नियम का पालन करें तो आगे चलकर पर्यावरण की दृष्टि से भी उन्हें कोई चिन्ता नहीं करनी होगी।

हमारी नई पीढ़ी को इस खतरे से सावधान हो जाना चाहिए।

एक समाचार पत्र में समाचार छपा था दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ कॉलेज में पर्यावरण जागरुकता के लिए ऊर्जा प्रबंधन पाठ्यक्रम आरंभ किया जा रहा है। पर्यावरण की दृष्टि से यह एक अच्छा कदम हैं। जो बात मैंने प्रस्तुत आलेख में कही है उसका कुछ तो समाधान होगा ही पर यह पाठ्यक्रम एक ही विश्वविद्यालय में क्यों? अन्य विद्यालयों में भी यह शिक्षा देनी चाहिए। जूनियर और हाई स्कूलों में भी इसका आरंभ किया जाना चाहिए क्योंकि अच्छी आदतें बचपन से ही पड़ती हैं।

नन्हें बालक में संस्कार डालने होते हैं। कभी प्रत्यक्ष कभी अप्रत्यक्ष। संस्कार का शाब्दिक अर्थ मांजना, चमकाना तथा परिष्कृत करना तथा सुधार देना होता है। इसीलिए बचपन की छोटी-छोटी बातें भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं।

● नोएडा (उ.प.)

वर्ग पहेली

संकेत

बायें से दायें-

०२) पुनः पुनः
०५) ग्रीष्म ऋतु का एक फल
०७) शिरा, रग
०८) दूसरे की वस्तु बगैर पूछे लेने वाला
०९) एक चर्म रोग जिसमें खुजली होती है
१०) .....पानी राखिए, बिन पानी सब सून
१३) विचार करना, चिंतन के बाद की प्रक्रिया

ऊपर से नीचे-

०१) कृष्ण का नाम
०२) क्लर्क के लिए प्रचलित संबोधन
०३) सार्दियों में ओढ़ने योग्य
०४) शृंगार
०६) बिना रस का, नीरस
११) भला
१२) गीला, भीगा हुआ

(उत्तर इसी अंक में)

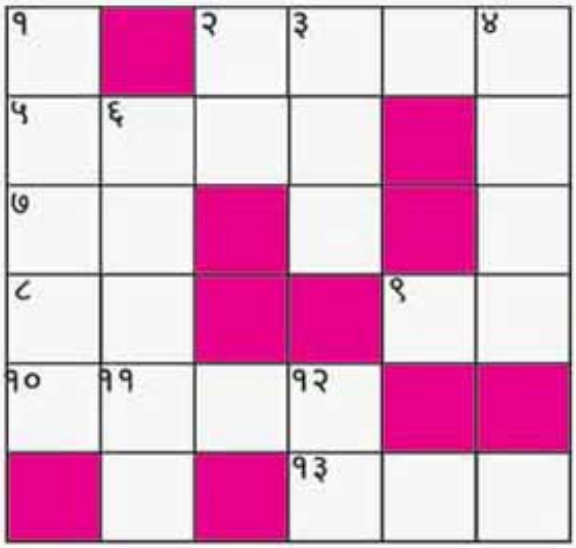

बर्गर का ठेला

कविता: शुभदा पाण्डेय

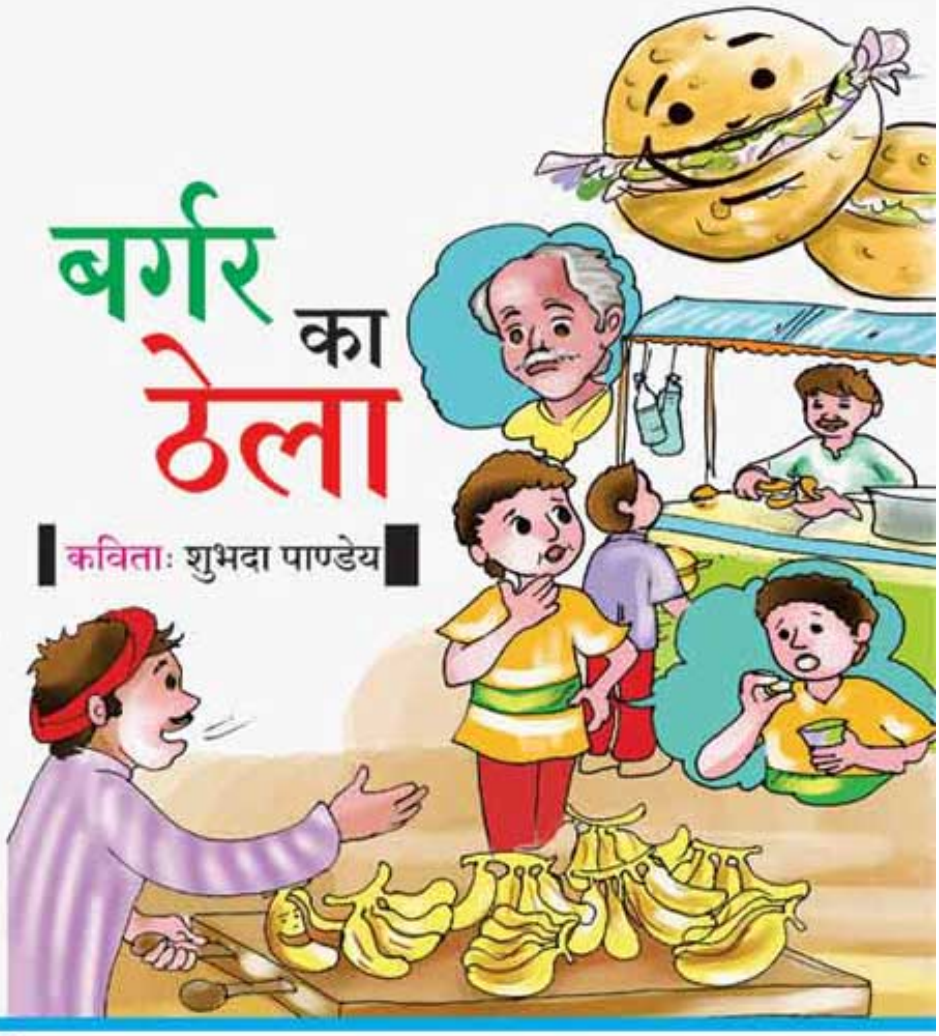

खड़ा आज बर्गर ठेले पर
गौरव सोच रहा है
खा तो लूं मैं चुपके से
पर मन जो कोच रहा है
दादा जी की भौंहे तनती
आँख तरेरे चाचा
माता जी की थप्पड़ से
भूलूँ आँचा-पाँचा
खाने से लगती बीमारी
सुई, गोली खाओ
किस पोथी में लिखा है बोलो
खाकर रोग बुलाओ।
इतने में केले वाले ने
गीत टेर कर गाया
हरे-हरे कुर्ते में हँसता
ऐसा केला लाया।

● शिलचर (असम)

(रोचक जानकारी)

अजब गजब जूते

मोहनलाल मगो

● लगभग पचास वर्ष से दिल्ली के पहाड़गंज बाजार में एक जूता लटका होता था। जिसके नीचे लिखा था जिसको पूरा आए उसे मुफ्त मे दिया जाएगा। जूता इतना बड़ा था कि हाथी के पांव में भी बड़ा हो। वह मैला-कुचैला जुता आज भी लटक रहा है।

● विपरीत इस के जर्मनी के फेंडेन में जार्ज वैसल द्वारा बनाए जाने वाले जूतों की अच्छी खासी कीमत चुकाते हैं बड़े जूतों के खरीददार।

● जार्ज वैसल लम्बे कद वालों के लिए बड़े आकार के जूते विशेष रूप से तैयार करते हैं।

● जर्मनी के शहर फ्रेडेन के इस व्यक्ति की बड़े आकार के जूतों की ख्याति दूर-दूर तक फैली है। तभी उसके पास हर स्थान से लम्बे कद वाले लोग जूते खरीदने व बनवाने के लिए आते हैं।

● सात फुट छः इंच कद वाले आईवरी कोस्ट के वासी इग्बट्रामेन डेमबेल कहते हैं कि मैं पहली बार ऐसा जूता पहन रहा हूं जिनसे मेरे पैरो में दर्द नहीं हो रहा।

● दिल्ली

दादी का पीपा

कहानी : सुधा भार्गव

छंदालाल और बिंदालाल की मित्रता बचपन से ही चली आ रही थी। दोनों ने ही फौज में भर्ती होने की ठान ली तो ठान ली। दोनों की माँ लाख गिड़गिड़ाई बाप ने लाल-पीली आँखें दिखाई पर फौजी बन कर ही रहे। रिटायर हुए तो साथ-साथ पर उसके बाद छंदालाल शहर में बस गया और बिंदालाल अपनी माँ के साथ गाँव में रहने लगा।

बिंदा ने शादी नहीं की थी लेकिन बच्चों में उसकी जान बसती थी। इसलिए बीच-बीच में अपने मित्र से मिलने शहर आता और उसके बच्चों पर छप्पर फाड़ ढेर सारा प्यार बरसा के लौट जाता।

एक बार छंदा के घर आते समय बिंदा अपनी माँ को भी साथ ले गया। माँ ने कभी गाँव से बाहर पैर रखा नहीं था। फिर शहरी हवा से मुलाकात कैसे होती?

गर्मी के दिन थे। दो मंजिला सीढी चढ़ते-चढ़ते बूढी माँ पसीने से लथपथ हो गई। दरवाजे पर ही छंदा की पत्नी ने उनके पैर छूकर आशीर्वाद लिया और बैठक कक्ष में बैठाया। एक मिनट उन्होंने इधर-उधर नजर दौड़ाई फिर खुश होते हुए बोली-''बहू! यह तूने अच्छा किया, मुझे बरफ खाने में बैठा दिया। मेरी तो सारी थकान ही मिट गई।''

''माँ जी! यहाँ कमरे को ठंडा करने वाली मशीन मतलब ए.सी. चल रहा है।''

''अरे बहू! मैं क्या जानूँ अई.सी. वै. सी. मैं जब बहुत छोटी थी अने बापू के साथ बरफखाने गई। वहाँ तो घुसते ही बड़ी ठंड लगने लगी। चारों तरफ बरफ की सिल्लियाँ ही सिल्लियाँ पड़ी थीं। उससे यह तेरा बरफखाना अच्छा है। एक बात बता तूने बरफ कहाँ रख छोड़ी है?''

''दादी माँ! वह तो पिघल गई और उसका पानी नाली से बाहर बह गया।'' नटखट नयन हाथ नचाते हुए बोला।

सबने चुप रहने में ही भलाई समझी क्योंकि दादी ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया था।

नयन की बड़ी बहन परी पानी के तीन गिलास लाई। दादी ने गटगट तीनों गिलास खाली कर दिए और बोली- ''पानी तो बड़ा मीठा और ठंडा हैं। लल्ली, एक गिलास पानी और ला नीयत न भरी।''

बहन ने जैसे ही फ्रिज खोला, उसकी तरफ इशारा करते हुए पूछा-''बेटी! यह क्या है?''

''पानी ठंडा करे की मशीन है। इसे हम रेफ्रीजरेटर कहते हैं।''

''बड़ा लंबा-चौड़ा नाम है इसका तो। मुझसे तो बोला भी न जाए।''

थोड़ी देर में सब खाने बैठे। दादी बोलीं-''बेटी,

गिलास से मेरी ये प्यास न बुझे। मुझे तो उस पीपे से लोटा भर पानी दे दो। वरना बार-बार तुझे पीपा खोलने उठना पड़ेगा।''

पहले तो परी पीपा का मतलब समझी नहीं और जब समझी तो हंसी के उड़ते गुब्बारों को पकड़ न सकी।

बड़ों की बात पर इस तरह हँसना माँ को जँचा नहीं और उन्होंने उसे गुस्से से घूरा। लेकिन हंसने का रोग तो ऐसा फैला की नयन की बत्तीसी भी खिल उठी।

पेट पूजा होते ही सबकी आँखों से मीठी-मीठी नींद झाँकने लगी। दादी माँ तो सोफे पर ही पसर गई। गुदगुदे सोफे पर उन्हें बहुत आनंद आ रहा था।

बोली- ''मैं तो भैया, न बरफखाना छोड़ने वाली वाली और न रेशम से ऐसे बिछौने को। झपकी यहीं ले लेती हूँ। तुम लोग जहाँ चाहो जाओ।''

''माँ जी! दूसरे कमरे में भी ए.सी. है। आप वहाँ आराम से सो जाइए।''

''क्या कहा? यहाँ दूसरा भी बरफखाना है। आह क्या मजा! चल बहू, जल्दी बता कमरा। पांच बजे तक पैर पसार के सोऊंगी, और हाँ शाम को रोटी मैं बना दूंगी। तू चिंता ना करियो। फूल सी बहू इस जानलेवा गर्मी में कैसी झुलस गई है।''

अस्सी वर्ष की उम्र में भी इतना उल्लास व फुर्तीलापन देखकर पूरा परिवार चकित था।

चार बजते ही दादी माँ की नींद टूट गई। मिचमिचाती आँखों को खोलते हुए कड़क आवाज में बोलीं-''बिटिया! जरा पीपे में से पानी दे जा और हाँ चूल्हे पर चाय का पानी चढ़ा दे। मैं बस अभी आई।''

कुछ ही देर में वे रसोई की तरफ बढ़ गई। गैस के चूल्हे पर पानी उबलने रख दिया था। उन्होंने वैसा चूल्हा कभी देखा नहीं था। चकित सी गाल पर हाथ रखते हुए बोलीं-''हाय दइया! यहाँ तो भट्टी से आग की बड़ी-बड़ी लपटें निकल रही हैं। मिट्टी का चूल्हा तो कहीं नजर नहीं आता।''

नयन की माँ फुर्ती से कमरे से निकल कर आई। वे डर गई थीं कि दादी बिना सोचे-समझे गैस के चूल्हे की टटोलबाजी न करने लगें।''

''माँ जी! यह गैस का चूल्हा है। इसमें लकड़ी-कोयला जलाने का खटराग नहीं और सफाई भी रहती है।''

''यह तो जादुई चूल्हा है। लगे, मुझे तो बार बार यहाँ आना पड़ेगा।''

''बार-बार आने-जाने का झंझट क्यों करो माँ, यही रह जाओ।'' उनका बेटा बिंदा बोला।

''मेरे गाँव के घर का क्या होगा? मेरे खेत, मेरे बैल? न न बेटा, गाँव तो मेरे खून में रच-बस गया है। वहीं की पैदाइश वहीं पली और ब्याही भी गाँव में। छोड़ने की बात से तो मेरा कलेजा फटने लगे हैं। दो दिन को कहीं चले जाओ पर आखिर में तो अपना घर ही प्यारा लगे है।''

बिंदा में अब इतना साहस न बचा कि पुनः माँ से शहर में रहने का आग्रह कर सके। एक सप्ताह में ही दादी माँ सबसे बहुत हिलमिल गई। उनके विनोदी स्वभाव से सब उनकी ओर खिंचे चले आते थे।

गाँव जाने के एक दिन पहले बड़ी उदास हो गई।

बोली-''बेटा छंदा! सबको लेकर गाँव जरुर आना। तुम्हें कोई परेशानी न होगी। वहाँ भी पीपा और बरफ खाना है। दादी के इस धमाके से नयन के कान खड़े हो गए।

उसने पूछा-''क्या दादी, तुम्हारे घर में फ्रिज जैसा पीपा है?''

''हाँ -हाँ मैंने कहाँ न, है। बड़ा गहरा पीपा है। उसका ही हम ठंडा मीठा पानी हलक से नीचे उतारे हैं।''

बिंदा गहरी सोच में पड़ गया कि माँ किस पीपे की बात कर रही है। अचानक उसके मुंह से निकला-''माँ! कुए की बात कर रही हो?''

''हाँ-हाँ! गांव का कुँआ पीपे से किसी बात में कम है।''

जोरदार हंसी का हुल्लड़ मच उठा।

''इसमें हंसने की ऐसी क्या बात है। वहाँ तो बरफखाना भी है।''

''बरफखाना!!'' सबके मुंह खुले रह गए।

''अचरज कैसा? घर के आगे चौरस आँगन में नीम का बड़ा सा पेड़ है। उसके तले ऐसी ठंडी दिलखुश हवा के झोंके लगे हैं कि शहरी बरफखाना तो उसके आगे भूल ही जाओगे।''

''दिन तो कट गया पर दादी रात में गर्मी में कैसे सोना होगा?'' परी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

''रात की चिंता न कर बिटिया। कमरे की खिड़कियाँ तो हम सारी रात खुली रखे हैं। ऐसी ठंडी हवा घुसे है कि चादर ताननी पड़े।''

इस बार चुलबुला नयन, सरल हृदया और स्नेही दादी के बरफखाने पर हंस न सका। उसको बूढी में अपनी दादी नजर आने लगी। वह पुलकित हो उनसे चिपट गया– ''दादी! कोई आए या न आए, मैं छुट्टियों में तुम्हारे पास जरूर आऊँगा।''

''अरे! केवल तेरी दादी हैं क्या? मेरी भी तो दादी हैं। मैं भी आऊंगी दादी और तुम्हारे चूल्हे की रोटी खाऊँगी।'' परी इठलाती हुई बोली।

''रे छंदा! तू कैसे चुपचाप खड़ा है। भूल गया जब तू छोटा था तो मेरे हाथों का बना सूजी–बेसन का बना हलवा कितने शौक से खाता था।''

''माँजी! मुझे अच्छे से याद है। मैं भी आपके हाथ का हलुआ खाने आ रहा हूँ।''

''आजा–आजा। कुछ दिनों को बहु भी चुल्हा चक्की से छुट्टी पाएगी।''

दादी का चेहरा चमक उठा। वह तो प्यारे पोता–पोती को पाकर निहाल हो गई जिनके लिए न जाने कब से तरस रही थी।

अगले दिन सुबह ही दादी अपने बेटे के साथ गाँव चली गई पर जाते–जाते छंदा के परिवार में अपने वात्सल्य की मिठास घोल गई।

● बैंगलुरू (कर्नाटक)

बाल प्रस्तुति

पहेली पन्ना

(१)
खड़ी है तो खड़ी है,
बैठी है तो खड़ी है।

(२)
एक प्लेट में दो अण्डा,
एक गर्म एक ठण्डा।

● अनुज विश्वकर्मा
(मुख्त्यारगंज)

(३)
कौआ आसमान में उड़ता,
मगर रहता कहा?

(४)
तीन कोनों की तितली,
नहाकर निकली।

(५)
पचास और पचीस,
में क्या अंतर है।

● आस्था सुराणा

(६)
ना पीती तेल पानी,
लोहे का घोड़ा कहलाती।
कच्चा हो या पक्का रास्ता,
मंजिल तक पहुँचाती।।

(७)
धरती में मैं पैर छिपाता,
आसमान में शीश उठाता।
पैरों से भोजन में खाता,
क्या नाम है मेरा भ्राता।।

● नागेन्द्र सिंह (रौन)

(उत्तर इसी अंक में।)

शब्दक्रीडा(१८)

पंचतत्व

बच्चो! हमारे मानव शरीर सहित सारी प्रकृति पांच महाभूतों अर्थात् पंचतत्वों से बनी है। ये सृष्टि के आधार भूत तत्व हैं। शब्द क्रीड़ा में। इन पाँचों के पाँच-पाँच पर्याय शब्द दिए हैं। आपको इन्हें ही खोजना है इस बार। पूरे २५ शब्द खोजने वाला उत्तम बुद्धि एवं क्रमशः २० व १५ नाम खोजने वाले मध्यम व सामान्य बुद्धि माने जाएंगें। (सही उत्तर इसी अंक में)

अ	भ	नी	क्षि	न	भ	म्ब	आ	का	श
पा	म्ब	अ	न	ति	ल	ग	न	अ	श
रा	भ	र	आ	ग	स	नी	म्बु	व	म्ब
ज	मी	ल	र	ग	लि	स	पा	नी	रा
स	नी	न्ध	अ	व	ल	सु	पा	न	पा
न्ध	वा	का	नि	सिं	पा	ज	अ	व	न्हि
त	यु	र	ल	ती	र	श	सु	प	क
व	वा	नी	र	न्हि	न	न्ध	व	प	यु
ग	ध	र	ती	त	रा	नी	अ	व	क
भू	भ	म्बु	ल	ति	स	ग्नि	ग	नी	ख

यह भी कीजिए

(१) क्या आप बता सकते हैं कि हमारे शरीर में यह पांचों तत्व किस रूप में उपस्थित है?

(२) पर्यावरण मे जब इन तत्वों को दूषित कर दिया जाता है तो इन पांचों तत्वों के प्रदूषण किस नाम से जाने जाते हैं?

(३) आप अपने मित्रों के साथ इनके अधिक से अधिक पर्याय ढूँढने का खेल भी खेल सकते हैं।

देवपुत्र प्रश्नमंच

सही उत्तर

(१)ब (२)स (३)अ (४)ब (५)ब (६)स (७)अ (८)ब (९)स (१०)अ

जानो पहचानो

- बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के वनवासी समाज में उन्हें भगवान की भांति पूजा जाता है।
- वे १९वीं सदी के महान क्रांतिकारी वनवासी वीर थे। जिन्होंने अंग्रेजों को नाकों चने चबवा दिए।
- मुण्डा जनजाति को संगठित कर अंग्रेजों के अत्याचार के विरुद्ध एकजुट कर संघर्ष के लिए तैयार किया।
- धरती बाबा के नाम से विख्यात १५ नवम्बर १८७५ को जन्में रांची झारखण्ड के उलीहातू गाँव में और ९ जून १९०० को रांची के कारागार में आखरी सांस लेकर अमर हुए।
- रांची में उनके नाम पर केन्द्रीय कारागार और हवाई अड्डा बना और समाधि बनी रांची के कोकर के पास जहाँ डिस्टीलरी पुल बना है।

बताइए! यह वनवासी महापुरुष कौन हैं?

गणित क्रीड़ा

देवांशु वत्स

१५×	१५+			५+	
	८+		१८+		
				३÷	
१८+			२−		६०×
	१२०×		१०+		

खेलने के नियम

गणित क्रीड़ा के जोड़, घटाव, गुणा, भाग और सूडोकू का मिला-जुला रूप है। खड़ी और आड़ी पंक्तियों में १ से ६ तक के अंक आने चाहिए। संकेत के आधार पर इस पहेली को पूरा करें। (१०+ का मतलब है कि इसके अंतर्गत आने वाले खानों के अंकों का योग १० होगा। उसी तरह १२× मतलब है कि इसके अंतर्गत आने वाले खानों के अंकों के गुणा करने पर १२ आएगा।)

(उत्तर इसी अंक में)

(७ जून जयंती)

कविता :डॉ.जयंत निर्वाण

राणा प्रताप

गाथा फैली घर घर है।
आजादी की राह चले तुम,
सुख से मुख को मोड़ चले तुम,
'नहीं रहूँ परतंत्र किसी का',
तेरा घोष अति प्रखर है।
राणा तेरा नाम अमर है।
भूखा प्यासा वन वन भटका,
खूब सहा विपदा का झटका
नहीं कहीं फिर भी जो अटका,
एकलिंग का भक्त प्रखर है।
भारत राजा, शासक, सेवक,
अकबर ने छीना सबका हक,
रही कलेजे सबके धक् धक्
पर तू सच्चा शेर निडर है।
राणा तेरा नाम अमर है।
मानसिंह चढ़कर के आया,
हल्दी घाटी जंग मचाया,
तेरा चेतक पार ले गया।
पीछे छूट गया लश्कर है।
राणा तेरा नाम अमर है।
वीरों का उत्साह बढ़ाए,
कवि जनमन के गीत सुनाएं
नित स्वतंत्रता दीप जलाएं
शौर्य सूर्य की उज्ज्वल कर है।
राणा तेरा नाम अमर है।
राणा तेरा नाम अमर है।

● सरदार शहर (राज.)

लघु कथा : मीरा जैन

पहाड़ की भूल

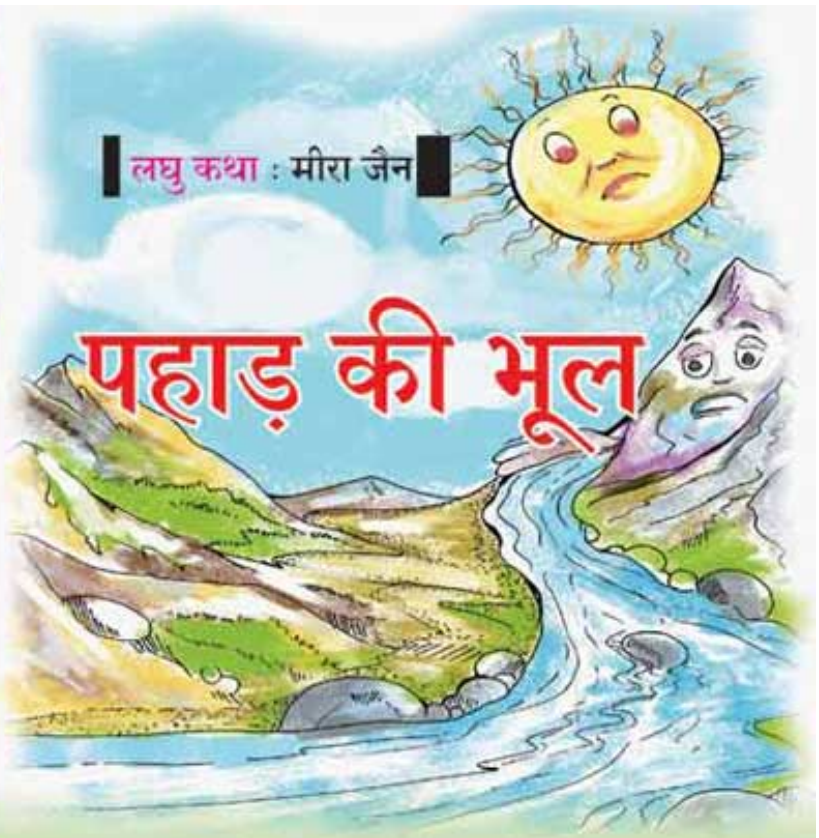

धरा पर फैली गर्म रेत, धूप से तपती चट्टानें। छू लो तो हाथ में छाले पड़ जाए, दूसरों की छोड़िए इस तपन से पहाड़ स्वयं बेहाल था। यह सिलसिला बरसों से चल रहा था फिर भी पहाड़ ने इस तपन से बचने के लिए कभी भी अपने अंदर समाए नीर को ये सोचकर बाहर आने ही नहीं दिया कि मेरा तन बाहर से चाहे झुलसे किंतु अंदर से तो शीतल है। साथ ही उसे डर था एक बार यह बाहर निकल गया तो रेत इसे अपनी आगोश में ले लेगी और वापिस आने नहीं देगी। लेकिन इस बार की बेतहाशा गर्मी से बचने के लिए पहाड़ को अपने अंदर समाए जल को बाहर लाना ही पड़ा और देखते ही देखते वह जल चट्टानों को शीतल करता हुआ रेत को भी ठंडक पहुँचाता हुआ बड़ी तेजी से आगे बढ़ने लगा। पहाड़ ने चैन की सांस ली। मगर अगले ही पल उसे चिंता ने घेर लिया।

अगले बरस उसका क्या होगा। यह पानी तो बड़ी तेजी से उसका दामन छोड़ रहा है अब तो मैं अंदर बाहर दोनों ओर से तपूँगा ओहो ये मैंने क्या किया?

अगले बरस पासा पलट गया उस पानी ने नदी का रूप धारण कर लिया था। परिणामतः चारों ओर हरियाली छा गई इस हरियाली से पहाड़ भी अछूता नहीं रहा कभी न बरसने वाले मेघ वहाँ की हरियाली पर प्रसन्न हो जमकर बरसे। ऐसा खुशनुमा वातावरण पहाड़ ने पहले कभी नहीं देखा था। उसका पोर-पोर प्रफुल्लित वह आनंद से सराबोर था उसे पहली बार महसूस हुआ कि- **जो सुख और आनंद बाँटने में है वह समेट कर रखने में नहीं।** जल को अपने अंदर समेट कर रखना उसके जीवन की सबसे बड़ी भूल थी। ● उज्जैन (म.प्र.)

जंगल गाने लगा

कहानी : अंकुश्री

बाघमारा जंगल बहुत घना था, ऊँचे-ऊँचे पेड़, घनी झाड़ियां। वहां तरह-तरह के जानवर रहते थे।जंगल के निकट एक गांव था-बालालौंग। बड़ा-सा गांव था। वहां के लोग जंगल पर आश्रित थे। सभी खुशहाल थे। वे दिन भर जंगलों में घूमकर फूल, फल, बीज, पत्ता, गोंद, दातोन, लकड़ी, छाल आदि वन पदार्थ जमा करते थे। गांव में सोमवार को साप्ताहिक हाट लगता था। गांव वाले जंगल से जमा सामानों को हाट में बेचते थे और अपने लिए सामान खरीदते थे।

लेकिन इधर कुछ वर्षों से जंगल की कटाई होने लगी थी। बाहर से कुछ लोग वाहनों से जंगल में आकर मोटे-मोटे पेड़ों को कटवा कर ले जाने लगे थे। ग्रामीणों को पेड़ों की कटाई-छंटाई करने से मजदूरी मिल जाती थी। वन पदार्थ की बिक्री से कम पैसा मिलता था। इसलिए गांव वाले पेड़ों की कटाई से बहुत खुश थे।

देखते-देखते जंगल के सारे पेड़ कट गए। महुआ, कटहल, आम, जामुन, सखुआ, केंद, पिआर आदि कुछ भी नहीं बचा। जंगल में हरियाली की जगह वीरानगी छा गई। गांव वालों को पेड़ काटने से मिलने वाली मजदूरी बंद हो गई। जंगल से जो वन पदार्थ चुन-बीन कर लाते थे। वह भी समाप्त हो गया। आजीविका के लाले पड़ गए। उनकी स्थिति खराब हो गई। कुछ ही वर्षों में गांव की सारी अर्थ व्यवस्था गड़बड़ा गई।

उस दिन सोमवार था। हाट में लोगों की भीड़ जुटी हुई थी। एक तरफ सब्जियां बिक रही थीं। एक तरफ मसाला की दुकाने सजी थीं। वहीं नमक बिक रहा था। जिसके खरीददार अधिक थे। कुछ दुकानों में चावल, दाल और अनाज बिक रहा था। भोजन के लिए

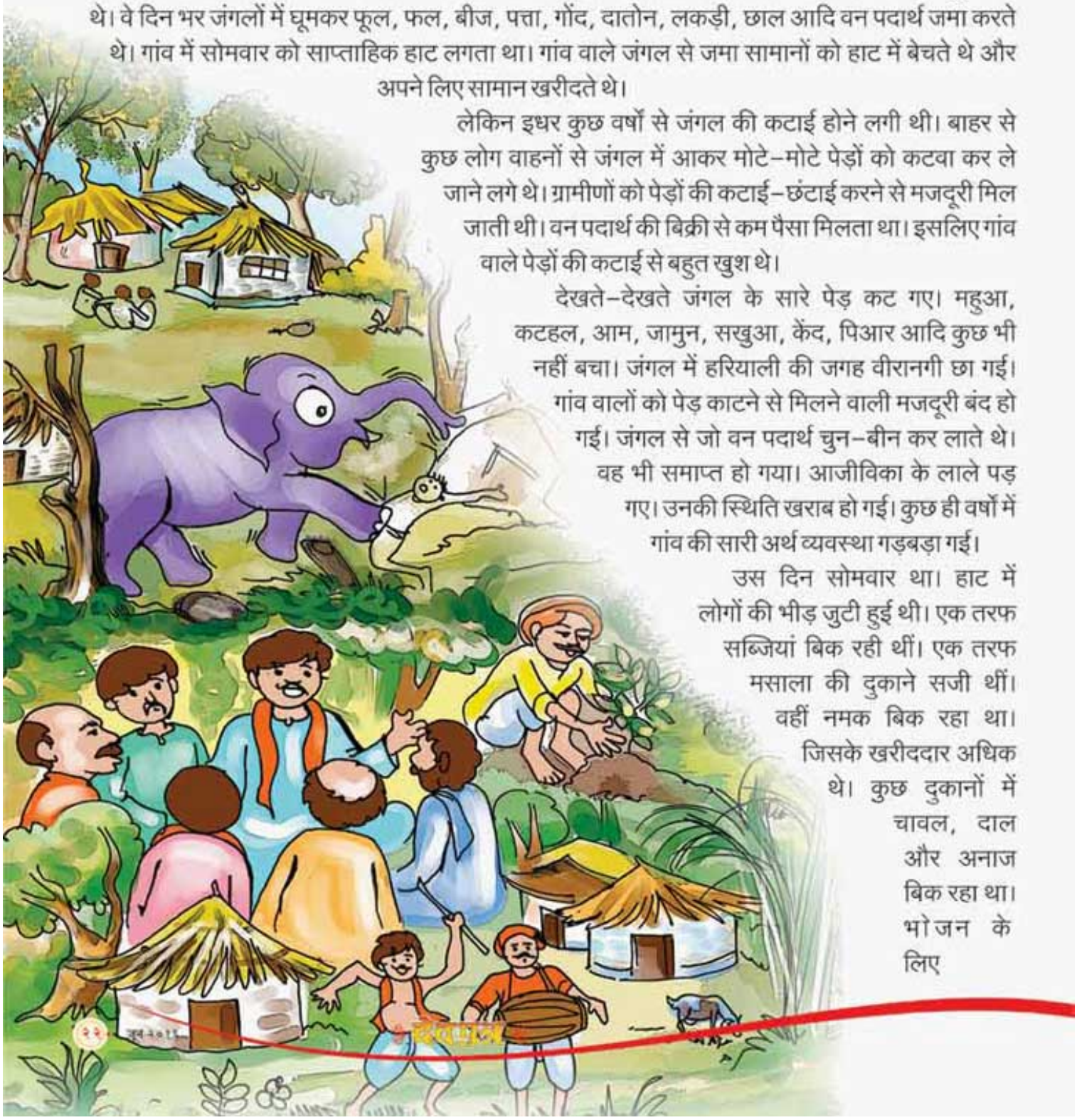

शाकाहारी और मांसाहारी हर प्रकार के सामान बिक रहे थे। जलावन बिक रहा था। लकड़ी की फल्लियां भी बिक रही थी।

हाट में खाने के भी तरह–तरह के सामान बिक रहे थे। नीमकी, सेंव, पेड़ा, बतासा आदि सजे हुए थे। ढुसका और पकौड़ी की भी दुकानें थीं, चावल और उड़द दाल से बने ढुसका की तीन दुकानें थीं।

रात में सभी सो गए तो जतरू ढ़िबरी की रोशनी में थोड़ी देर पढ़ने बैठा। वह स्थिर मन से पढ़ रहा था। रात का वातावरण शांत था, तभी उसे पेड़ की टहनियां टूटने की आवाज सुनाई पड़ी। पेड़ की कटाई–छंटाई दिन में होती है, रात में नहीं। वह मन ही मन कुछ सोचने लगा। जतरू की आशंका सही निकली। करीब सौ गज की दूरी पर एक हाथी पेड़ की टहनियां तोड़ रहा था। हाथी काफी गुस्से में था। जतरू समझ गया कि हाथी अब गांव के घरों को तोड़ेगा। वहां रखा महुआ और धान खा जाएगा।

गांव में हाथी आया सुनकर कोहराम मच गया। पिछले सप्ताह ही शिबु की पत्नी और शनिचरा के बेटा को हाथी ने मार दिया था। दोनों हाट से गांव लौट रहे थे। उनके माथे पर महुआ की पोटली थी। वे अंधेरे में हाथी को नहीं देख पाए थे। बगल से गुजरते समय हाथियों ने उन्हें रौंद कर मार डाला था।

उस दिन भी हाथियों ने दो आदमियों को कुचल दिया था। प्रेमचंद बाजार से लौट रहा था,अंधेरा होना शुरू हो गया था। उसके हाथ में किरासन तेल का लालटेन था। वह बढ़ा जा रहा था। तभी अंधेरे में उसे कोई आकृति दिखाई दी। दो हाथी चुपचाप खड़े थे। प्रेमचंद हाथियों को देख कर ठमक गया। वह पीछे मुड़ कर दूसरा रास्ता पकड़ लिया। वह अभी गांव की ओर जा ही रहा था कि उसे किसी के चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी– ''बचाओ! बचाओ!!''

आवाज थोड़ी देर में बंद हो गई थी। प्रेमचंद समझ गया था कि हाथियों की चपेट में कोई आ गया है। हो–हल्ला सुन कर लालटेन, टार्च, भाला, लाठी आदि लेकर लोग वहां पहुंच गए थे। भोंदू और रकटू को हाथियों ने मार दिया था। सप्ताह–दस दिनों पर हाथियों द्वारा कोई न कोई ग्रामीण मारा जाता था। हाथी लोगों को मारते ही थे, घरों को भी तोड़ देते थे। वे घर के अंदर रखे महुआ और धान भी खा जाते थे।

शराब की महक से भी हाथी पहुंच जाते थे। वे घर में रखी शराब पी जाते थे। हाथियों के जाने–आने से खेत की फसल रौंद कर खराब हो जाती थी। खेत में धान की फसल तैयार रहने पर हाथी उन्हें भी चट कर जाते थे। जब कभी हाथी कोई नुकसान पहुंचाते थे। गांव वाले मुआवजा के लिए प्रशासन तक पहुंचा जाते थे, मुआवजा लेने–दिलवाने में ही गांव वाले परेशान थे। थोड़ा पढ़े–लिखे नेता किस्म के लोग अपना काम धंधा छोड़ कर मुआवजे दिलवाने में लगे रहते थे। इससे उन्हें कुछ कमाई हो जाती थी। समस्या की जड़ में जाने की किसी को फुरसत नहीं थी। ऊपर ही ऊपर सारा काम हो रहा था। आखिर यह कब तक चलता। मुआवजा कोई विकल्प नहीं था।

एतवा एक समझदार युवक था। वह समझ रहा था कि मुआवजे से गांव का विकास संभव नहीं है। उसने प्रश्न उठाया कि आखिर गांव में हाथी आते क्यों है? हाथी जंगली जानवर हैं, इतना बड़ा जंगल छोड़कर वे गांव में आना क्यों चाहते हैं? किसी ने कहा–''हाथी भोजन की तलाश में गांव में आते हैं।''

प्रेमचंद और एतवा गांव के युवा थे, हाथियों के आतंक से निपटने के लिए उन्होंने ग्रामीणों की बैठक बुलाई। सैकड़ों लोगों ने बैठक में भाग लिया। हाथियों के आतंक से निजात पाने के लिए तरह–तरह के विचार आए।

''हाथियों को गांव से दूर भगा दिया जाए।''

''हाथियों को जंगल में आहार मिल जाए तो गांव में आदमी के बीच नहीं आएंगे।''

''गांव के चारों तरफ कंटीले तार लगा दिए

जाए।''

''हाथी भगाओ दल का गठन किया जाए, जो हाथियों को गांव में नहीं घुसने दें।''

''हाथियों के प्रवेश मार्गों के पहले घरों में पटाखे का भण्डार रखा जाए और शाम होने पर थोड़ी-थोड़ी देर में पटाखा छोड़ा जाए।''

''शाम होने के बाद गांव के चारों तरफ बिना साइलेंसर की मोटर साइकिल से आवाज निकालते हुए भ्रमण किया जाए।''

बैठक में तरह-तरह के विचार आए। चर्चा के बाद वे खारिज होते गए। काफी देर तक यही सब चलता रहा।

बैठक में बुजुर्गों का अधिक बोलबाला था। युवा प्रायः चुपचाप ही थे। बुजुर्गों के विचारों पर कोई अंतिम निर्णय नहीं हो पा रहा था। प्रेमचंद के मन में कुछ बातें कुलबुला रही थी। उसने कहा-''गांव में हाथी शाम के बाद आते हैं। उससे पूर्व उनके प्रवेश मार्ग पर मशाल जला दिए जाएं।'' उसने आगे कहा-''गांव में हाथी भोजन के लिए आते हैं। इसलिए घरों के अंदर अनाज नहीं रखा जाए। गांव के बाहर ऊंची चट्टानों में गड्ढा बना कर उसमें अनाज रखा जाए और उसे चट्टानों से ढक दिया जाए।

प्रेमचंद की बातें सभी गौर से सुन रहे वह बिलकुल नयी बात कर रहा था-''हमें एक और सावधानी बरतनी होगी। घरों में महुआ नहीं रखना होगा। साथ ही यह भी **आवश्यक है कि किसी घर में शराब नहीं रखी जाए और न कोई शराब पीकर गांव में आए।**''

''लेकिन हम लोग शुरु से ऐसा करते आ रहे हैं। पहले तो हाथी कभी नहीं आते थे।'' यह गांव के बुजुर्ग पोकलू काका की आवाज थी।

उन्हें प्रेमचंद ने बताया-''काका! पहले और अब की स्थिति में अंतर आ गया है। हम लोग जंगलवासी हैं। सबसे बड़ा अंतर जंगल में आया है। अब न ऊंचे-ऊंचे पेड़ बचे हैं और न घने जंगल। अभी स्थिति ऐसी हो गई है कि एक किनारे से जंगल के दूसरे किनारे पर खड़े आदमी को देखा जा सकता है। अब तो सिर्फ जंगल की जमीन बची है और कुछ झाड़ियां।''

''लेकिन ऐसा हुआ कैसे?'' एक बुजुर्ग ने सबसे प्रश्न किया।

एक दूसरे बुजुर्ग ने कहा-''हम जंगलवासियों की मुख्य आजीविका जंगल है। पहले हम लोग जंगल से फल, फूल, बीज, दातौन, पत्ता, जलावन आदि इकट्ठा किया करते थे। हाट में उसे बेचते भी थे। लेकिन कुछ दिनों से जंगल कटवाने वालों की मजदूरी पर आश्रित हो गए थे। अब स्थिति ऐसी हो गई है कि जंगल में पेड़ भी नहीं बचे हैं। ऐसे में गांव के आसपास मजदूरी भी नहीं मिल पाती है।''

''इसी कारण ऐसी नौबत आई है। हम लोग भुखमरी के कगार पर खड़े हैं। मजदूरी के लिए काफी दूर शहर जाना पड़ता है। मजदूरी रोज नहीं मिलती। शहर जाने-आने में काफी समय निकल जाता है। हम लोग बहुत थक जाते हैं। कब रात हुई और कब सुबह-यह पता ही नहीं चल पाता।'' गांव का एक दूसरा युवक एतवा बोल रहा था-''हम लोग तो गांव से दूर चले जाते हैं लेकिन जंगल के जानवर कहां जाए। छोटे-छोटे जानवर का तो अस्तित्व ही खत्म हो गया। आप लोग जितने जानवरों के बारे में बताते हैं, वे अब कहां दिखाई देते हैं? बाघ, तेंदुआ, हिरण, गौर सब खत्म हो गए। जंगली सुअर और जंगली कुत्ता भी यहां के जंगल में अब नहीं दिखते। कुछ भेड़िए बचे हैं और आठ-दस भालू इनके अलावा कुछ हाथी हैं, जिनसे हम तबाह रहते हैं।''

एतवा की बातें सुनकर सभी शांत हो गए। वहां बैठे लोगों को लगा कि काठ मार गया हो। एतवा ने आगे कहा-''यदि हम लोगों ने जंगल को कटने नहीं दिया होता तो ऐसी स्थिति नहीं आ पाती। सारी तबाही की जड़ है जंगल की बर्बादी।''

''हमने तो जंगल की सुरक्षा की कभी बात ही नहीं सोची। इतना बड़ा जंगल हैं, इसकी सुरक्षा के लिए क्या चिंता की जाए। पोकलू की आवाज में लाचारी थी– जंगल हमारी सुरक्षा करता है हम इसकी सुरक्षा क्या करें?''

''हमारी इसी सोच ने तो हमें उजाड़ दिया– ''प्रेमचंद ने कहा–''हम तो सोचें कि हमें आगे क्या करना है। बीती को दोहराने से अब कोई लाभ नहीं हैं।''

''लाभ है'' एतवा ने कहा– इसका एक बहुत बड़ा लाभ है। बीती बातों को जानने–सुनने से हमें सबक मिलती है।'' उसने आगे कहा–''हम अब भी अपने गांव को खुशहाल बना सकते हैं इसे हाथियों के आतंक से बचा सकते हैं।''

''वह कैसे?''

''सबसे पहले हम लोग हाथियों के भोजन की व्यवस्था करें। जंगल में खाली जमीन पर बांस के भरपूर पौधे लगा दें। जंगल के किनारे के खेतों में ईख लगा दें। हाथियों में विशेषता है कि जब तक बांस या ईख तैयार नहीं हो जाता, वे उसे नहीं खाते हैं।'' गांव के एक बुजुर्ग का यह सुझाव सभी को भाया।

एक दूसरे बुजुर्ग ने कहा–''जंगल प्रकृति की देन है यदि इसे छेड़ा नहीं जाए तो इसका विकास स्वतः हो जाता है। इसके लिए गांव के मवेशियों को जंगल में जाने से रोकना होगा। एक काम हमें और करना होगा। जलावन या अन्य कार्यों के लिए पेड़ों की कटाई बंद करनी होगी। ऐसा करने से एक साल में ही जंगल में हरियाली आ जाएगी। दूसरे साल के बाद उजड़े जंगल की जगह हरा–भरा दिखने लगेगा।

एतवा ने कहा–''हम गलती नहीं दोहराएंगे। जंगल को बचाएंगे।''

जंगल की सुरक्षा के लिए लोगों ने कमर कस ली। दूसरे दिन से ही लोग इस काम में लग गए।

जंगल में एक नदी बहती थी। वह काफी ऊंचाई से नीचे आती थी। घूम–घूमा कर बहती वह नदी कहीं पतली होकर बहती थी तो कहीं चौड़ी होकर। साल भर उसमें पानी रहता था। गांव वालों ने एक काम किया। नदी जहां पतली होकर बहती थी, वहां चट्टान जमा कर

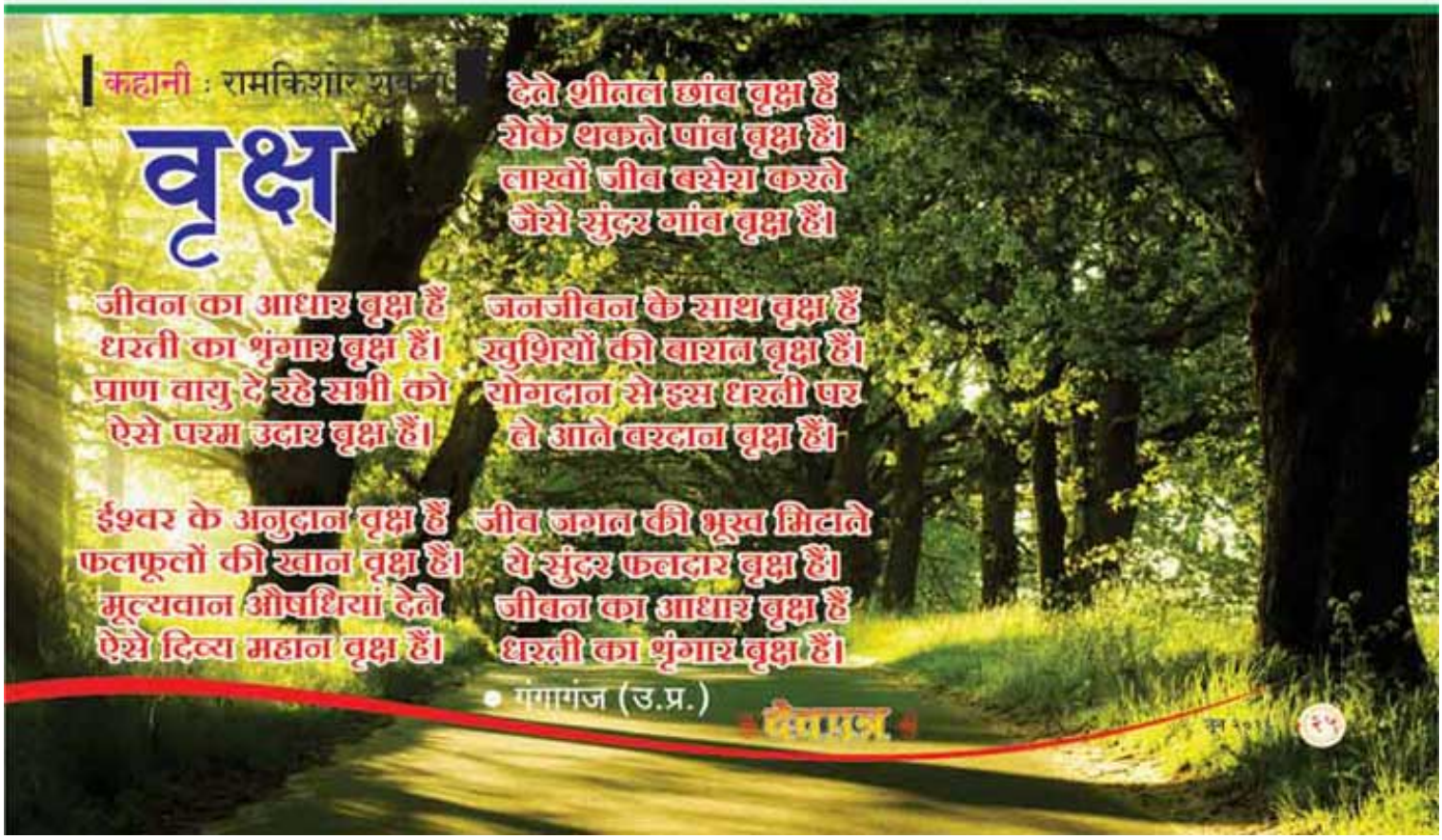

दी। इससे नदी में जगह–जगह पानी का ठहराव हो गया। यह जंगल के स्वास्थ्य के लिए बड़ा लाभकारी रहा।

बसंत में सभी पौधों में कोंपल आ जाते हैं। कटे हुए बड़े–बड़े पेड़ों से भी कोंपल फूट पड़े। नदी के आसपास के कटे पेड़ों से खूब सारे कोंपल निकल आए। उन पेड़ों की वृद्धि भी तेजी से हो गई। वहां खूब हरियाली फैल गई। गांव वालों ने एक–दो कोंपलों को छोड़ बाकी हटा दिए। उनका तेजी से विकास होने लगा। बरसात आने पर जंगल में कई तरह के पौधे उग आए। बरसात खत्म होने तक जंगल में हरियाली भर गई। खाली जगहों में बांस के पौधे लगा दिए गए थे। वे भी काफी तेजी से बढ़ने लगे।

गांव वाले रात में जाग कर ढोल बजाते और पटाखे छोड़ते थे। इससे गांव में हाथियों ने आना बंद कर दिया। सुबह–सुबह गांव के कुछ युवक खेत से ईख काट कर जंगल में रख आते। हाथी उसे चटखारे ले–कर खाते थे।

गांव का प्राथमिक विद्यालय रविवार को बंद था। विद्यालय परिसर के बाहर बच्चे खेल रहे थे। तभी एक मोर जंगल की ओर से उड़ता हुआ आया और विद्यालय की छत पर बैठ गया। बच्चों की उस पर नजर पड़ी तो वे ताली बजाने लगे। वे खुशी से नाचने भी लगे। उन बच्चों ने कभी मोर नहीं देखा था।

बात तुरंत गांव में फैल गई। मोर को देखने के लिए पूरा गांव जमा हो गया। ''वर्षों बाद कोई मोर गांव में आया है।'' पोकलू काका ने कहा।

उसके बाद से कई तरह के पक्षी गांव में दिखाई देने लगे। जंगल से भी तरह–तरह के पक्षियों और जानवरों की आवाज आने लगी। लगता है कि जंगल जिन्दा हो गया है और बोल तथा गा रहा है।

गांव वाले भी बहुत खुश थे। अब वे हाथियों से आतंकित नहीं थे। हर कोई खुश था। खुशी जंगल से लेकर गांव तक दिखाई दे रही थी। गांव वाले रात में नगाड़ा बजा कर एकजुट हो जाते थे और मांदर की थाप पर नाचते–गाते थे। ऐसा लगता था कि जंगल गा रहा है और गांव वाले नाच रहे हैं।

● नामकुम (झारखण्ड)

सही उत्तर

वर्ग पहेली

१ मा		२ बा	३ र	बा	४ र
५ ख	६ र	बू	जा		स
७ न	स		ई		रा
८ चो	र			९ खा	ज
१० र	११ हि	म	१२ न		
	त		१३ म	न	न

गणित क्रीड़ा-०२

१५× ५	१५+ ६	३	२	५+ १	४
१	८+ २	४	१८+ ३	५	६
३	१	५	४	३+ ६	२
१८+ २	४	६	२- ५	३	१०× १
६	१२०× ३	२	१०+ १	४	५
४	५	१	६	२	३

उलझन सुलझाओ

● राजेश गुजर

बच्चो, गर्मी में हाथियों को गर्मी से राहत के लिए कौन सा हाथी कौन सा कौन सा फल खा रहा है, जरा बताओ?

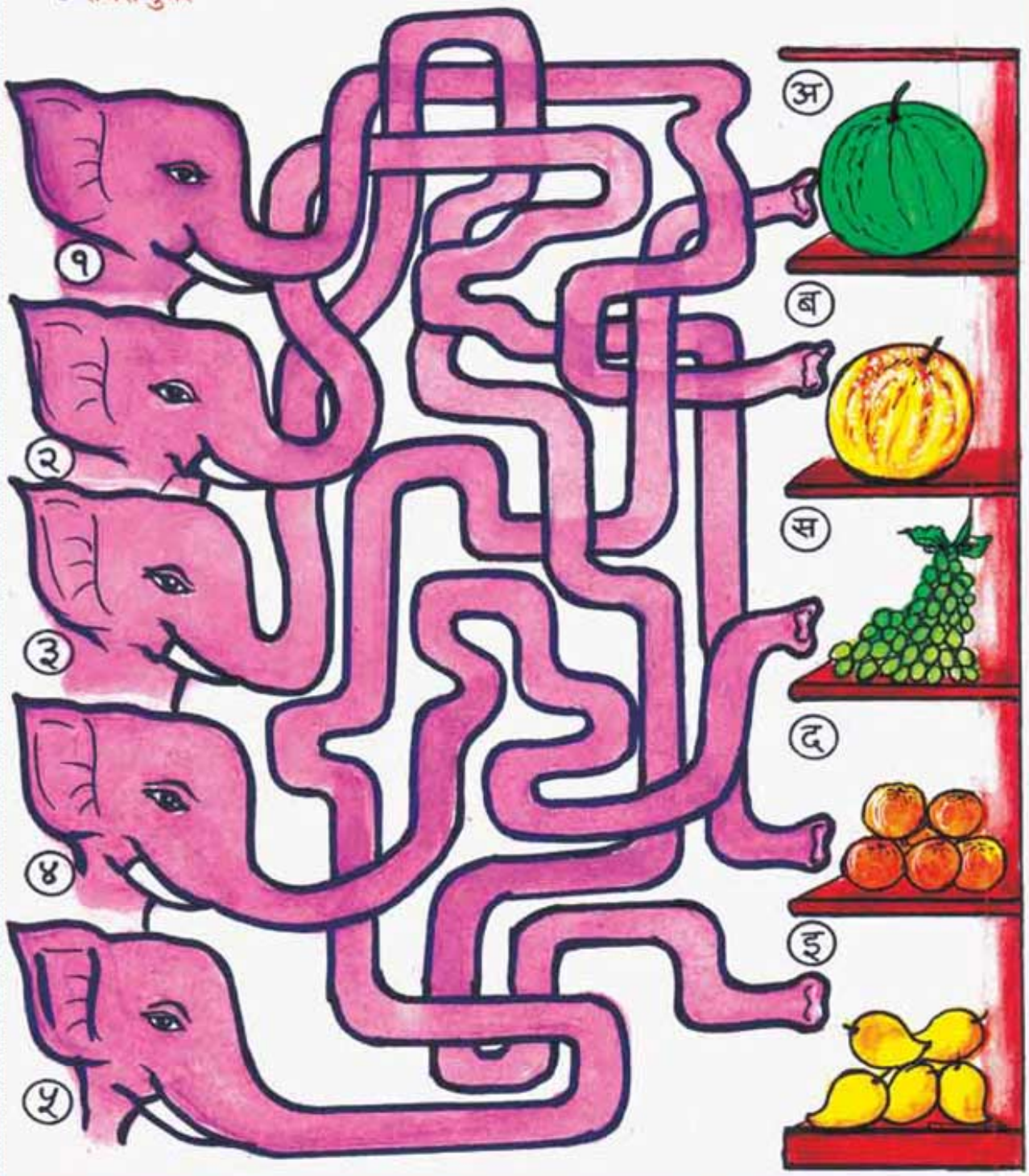

र अग्रसर मध्यप्रदेश

- प्रदेश की 95% सड़कों का उन्नयन. 62 हजार किलोमीटर सड़कों का निर्माण, 14,800 बसाहटें ग्रामीण सड़कों से जुड़ी.
- एक करोड़ 64 लाख बच्चों का शाला में हुआ नामांकन, हर बच्चे तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच, बारहवीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर 10 हजार विद्यार्थियों को मिले लेपटॉप.
- आदिवासी वर्ग के विद्यार्थियों ने कक्षा 12 के साथ-साथ राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा द्वारा IIT/NLIU/Medical में प्रवेश प्राप्त कर गुणवत्ता की पहचान बनाई. राज्य सरकार इन विद्यार्थियों का समस्त शैक्षणिक व्यय का भुगतान कर रही है.
- आदिवासी विद्यार्थियों को स्नातक योग्यता उपरान्त IAS परीक्षा की तैयारी हेतु दिल्ली में कोचिंग की सुविधा तथा विदेश में अध्ययन हेतु चयनित विद्यार्थियों को समस्त शैक्षणिक शुल्क का भुगतान राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है.
- महिला सशक्तिकरण के नये प्रयास, पंचायतों, नगरीय निकायों में 50% आरक्षण, संविदा शिक्षक में 50% और पुलिस की नौकरियों में 30% आरक्षण, बेटी बचाओ अभियान संचालित.
- लाड़ली लक्ष्मी योजना में 21 लाख कन्याओं को मिलेगी जीवन के हर पड़ाव पर मदद.
- मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना में तीन लाख 57 हजार से अधिक जरूरतमंद कन्याओं के विवाह सम्पन्न.
- बाल विवाह के विरुद्ध ''लाड़ो'' अभियान संचालित, 70 हजार से अधिक विवाह रोकने में सफलता.
- मातृ मृत्यु दर में 114 बिन्दुओं की गिरावट. मातृ मृत्यु दर 335 प्रति लाख प्रसव से घटकर अब हुई 221, राष्ट्रीय औसत से अधिक गिरावट.
- लिंगानुपात पिछले दशक में 919 से बढ़कर अब हुआ 933 .
- शिशु मृत्यु दर 76 से घटकर 54 हुई, गिरावट की दर राष्ट्रीय औसत से अधिक.
- छात्रवृति तथा अन्य शासकीय योजनाओं का लाभ सीधे हितग्राहियों के बैंक खाते में.
- युवाओं को उद्योग और व्यवसाय के लिए विभिन्न योजनाओं से अनुदान और ऋण 51 हजार से अधिक युवा लाभान्वित.
- 20 हजार लघु और सूक्ष्म उद्योग स्थापित.
- देश का पहला राज्य जिसमें लोक सेवा गारंटी अधिनियम में 23 विभाग की 163 सेवायें समय में मिलने की गारंटी. इसमें 102 सेवाएँ ऑनलाइन हो गयी हैं.
- डिजिटल मध्यप्रदेश ई-टेण्डरिंग, ई-पेमेंट, ई-पंजीयन, ई-स्टांपिंग, ई-साइन जैसे नवाचार, छात्रवृत्तियाँ, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की राशि हितग्राहियों के बैंक खातों में ट्रांसफर, पारदर्शी प्रशासन.
- सीएम हेल्पलाइन- सरकार और नागरिकों के बीच की दूरी सिर्फ एक फोन काल पर, जन शिकायतों का त्वरित और समाधानकारक निराकरण, 60 लाख काल के दिये गये जवाब.
- जन धन योजना अंतर्गत लक्ष्य प्राप्त करने वाला प्रथम राज्य (बड़े राज्यों की श्रेणी में), 1.54 करोड़ परिवारों के पास कम से कम एक बैंक खाता.

R.O. No. D-79121

कास का

इंदूर परस्पर सहकारी बैंक लिमिटेड, इंदूर

पंजीकृत कार्यालय - परस्पर सहकार भवन 3/1, साउथ तुकोगंज, इन्दौर - 1
फोन नं. 2522141,2523784,2522724 फैक्स 2525219
ई-मेल ipsb_l@yahoo.com वेबसाईट www.ipsbank.in

स्थापना : 1909

सहकारिता के परचम तले 107 वर्षों से सतत आपकी सेवा में तत्पर

जमाओं पर आकर्षक ब्याज दर

मुदती ठेव, पुनर्विनियोजन व रेकरिंग डिपॉजिट

30 दिन से 90 दिन तक	5.50%
91 दिवस से 180 दिन तक	5.75%
181 दिन से 364 दिन तक	6.00%
12 महिने से 24 महिने से कम	8.00%
24 महिने से 36 महिने से कम	8.25%
36 महिने से 60 महिने से कम	8.50%
60 माह व उससे अधिक	8.00%

वरिष्ठ नागरिक (60वर्ष) 0.50% अतिरिक्त ब्याज दिया जावेगा।
रु. 1.00 करोड़ एवं उससे अधिक जमाओं पर 0.10% से 0.20% तक अतिरिक्त ब्याज दिया जा सकेगा।

आकर्षक ब्याज दर पर त्वरीत ऋण सुविधा

- गृह ऋण 11.00% प्रतिवर्ष
- मार्टगेज लोन 13.50% प्रतिवर्ष
- टू व्हीलर लोन 11.50% प्रतिवर्ष

अन्य कर्ज सुविधा
जमानत कर्ज
व्यापारी कर्ज
शैक्षणिक कर्ज
आकर्षक दरों पर उपलब्ध

विशेष : देशभर में एक लाख से अधिक केन्द्रो पर ए.टी.एम. के उपयोग की सुविधा

कार लोन
10.50% प्रतिवर्ष

स्वर्ण आभूषण पर गोल्ड लोन
11.50% प्रतिवर्ष

- लॉकर सुविधा अत्यंत अल्प दरों पर उपलब्ध है।
- NEFT व TRTGS की सुविधा। बैंक का IFS CODE-ICIC00INPRS है।
- नागरिकों की सुविधा के लिए पेन कार्ड बनाने हेतु आवेदन स्वीकार किए जाते हैं।

संचालक मंडल

शेखर अ. किबे
मानसेवी सचिव

विपीन गो. धानापुने
उपाध्यक्ष

सी.ए.संतोष भा.देशमुख
अध्यक्ष, कार्यकारी समिति

डॉ.(सौ.) माया उ. इंगले
अध्यक्ष

सर्वश्री भालचंद्र वि. चिपलूणकर, अनिल शं कुटंबले, श्रीनिवास शं. कुटुंबले, श्रीमती उज्वला बापट, शशिकांत शा. गडकरी, सुबोध गो.काटे, सी.ए.निरंजन च. पुरंदरे, प्रदीप गो. देशपांडे, अजय शा. वैशंपायन, विनय प्र. देशपांडे, आशुतोष उ.निमगांवकर
सत्येन्द्र स. नातू (मुख्य कार्यपालन अधिकारी)

बैंक की विविध जानकारी हेतु सम्पर्क

शाखा - तिलक पथ 7489721897, जेल रोड (कोठारी मार्केट) - 7489853787, मनोरमागंज-8815045941,
ट्रांसपोर्ट नगर (स्नेह नगर)- 7489592872, जवाहर मार्ग (हुकुमचंद मार्ग) - 7489772383

निवेदन - समस्त सदस्य एवं खातेदारों से निवेदन है कि:-

01.बैंक में आपके खातो की K.Y.C. संबंधी पूर्तता न की गई हो तो उसे आवश्यक रूप से करवाये। इस संबंध में संबंधित E-mail उपयोग कर सकते है।
02.अपने सभी जमा खातो को संचलन में रखे,संचलन में होने पर खाते की राशि नियमानुसार भारतीय रिजर्व बैंक को प्रेषित की जावेगी।
03.ATM सुविधा हेतु शाखा प्रबंधक से सम्पर्क करे।

हमारे राज्य पुष्प

मिजोरम का राज्य पुष्प: लालवाण्डा

डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत के उत्तर पूरब में,
सभी जगह मिल जाता।
चीन न्यूगिनी आस्ट्रेलिया,
से भी गहरा नाता।
मूल हिमालय में घर इसका,
लेकिन फूल निराला।
सर्दी पाकर खिल सकता है,
किसी जगह मतवाला।
वृक्षों पर खिलता है लेकिन,
फूल लताओं वाला।
चढ़ती लता वृक्ष के ऊपर,
लेती रूप निराला।
ऋतु बसंत में इसी लता पर,
लाल वान्डा आता।
लाल रंग से कामदेव सा,
मादक रूप दिखाता।
लाल वान्डा फूल हमारे,
काम बहुत से आता।
और अन्य फूलों से मिलकर,
संकर फूल बनाता।

• भोपाल (म.प्र.)

सही उत्तर

शब्दक्रीड़ा : पंचतत्व

- भू, क्षिति, अवनी, वसुन्धरा, धरती
- पानी, जल, नीर, सलिल, अम्बु
- अग्नि, अनल, पावक, आग, वन्हि
- समीर, वायु, अनिल, पवन, वात
- ख, नभ, आकाश, अम्बर, गगन

गरमाती धरती

राजेन्द्र निशेश

ग्लोबल वार्मिंग से गरमाती धरती,
ग्लेशियर पिघल रहे, घबराती धरती।
वायु मंडल हो रहा सारा ही दूषित,
उथल-पुथल है भीतर बतलाती धरती।
ग्रीन हाउस गैसों से बढ़ रहा खतरा,
सभी की चाहत है मुस्कुराती धरती।
कहीं बाढ़, कहीं सूखा, रंग दिखलाता,
खून के आँसू भीतर बहाती धरती।
सुनामी का तांडव कहीं लील न जाए,
बचा लो तटों को, पाठ पढ़ाती धरती।
अंधाधुंध न काटो, बढ़ाओ वृक्षों को,
पर्यावरण बचालो समझाती धरती।

● चण्डीगढ़

कविता बनाइए १८

बच्चो! बारिश के पानी में कागज की नाव तैराना भला किस बच्चे को नहीं भाता है। बरसात आ गई है तो बनाइए न चार पंक्तियां भी कविता की, नाव के साथ-साथ। चयनित कविता प्रकाशित होगी अगस्त अंक में।

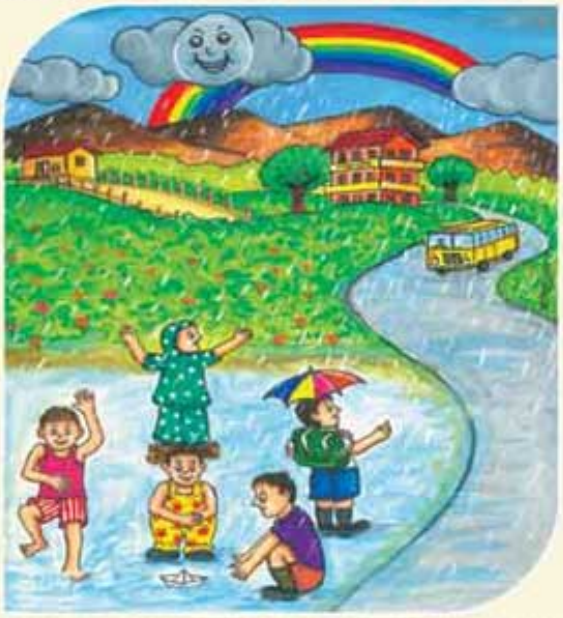

(शिवराज्यभिषेकः ज्येष्ठ शुक्ल १३ (इस वर्ष १८ जून)

विएतनाम में शिवाजी महाराज की प्रेरणा

विएतनाम इस छोटे से देश ने अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश को धूल चटाई थी। लगभग २० वर्ष चले इस युद्ध में अमेरिक परास्त हुआ था। विजय के बाद विएतनाम के राष्ट्राध्यक्ष से पत्रकारों ने प्रश्न पूछा कि अमेरिका को कैसे हरा पाए? युद्ध कैसे जीता? इस पर उन्होंने उत्तर दिया, 'वास्तव में अमेरिका जैसी महाशक्ति को हराना असंभव है, लेकिन उसी महाशक्ति से जूझने के लिए मैंने एक महान राजा का चरित्र पढ़ा। उससे मिली प्रेरणा से मैंने युद्धनीति बनाई, उसी को लागू किया और आसानी से विजय पाई।'

आगे पत्रकारों ने पूछा, कौन था वह महान राजा? मित्रो! मैंने जब इसका उत्तर पढ़ा तो मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो गया, जैसा अब आपका भी होगा...तो इस प्रश्न पर विएतनाम के राष्ट्राध्यक्ष अपने स्थान पर खड़े हुए और उन्होंने आदर से कहा– 'छत्रपति शिवाजी महाराज।' आगे उन्होंने कहा कि–**'यदि ऐसा राजा हमारे देश में पैदा होता तो आज हम पूरी दुनिया पर राज करते।'**

कुछ वर्षों बाद विएतनाम के उन राष्ट्राध्यक्ष महोदय की मृत्यु हुई। उन्होंने अपनी समाधि पर जो वाक्य लिखने के लिए कहे, वे थे– 'शिवाजी महाराज का एक सैनिक समाधिस्थ हुआ।' ये वाक्य हम आज भी इनकी समाधि पर देख सकते हैं।

कुछ वर्षों के बाद विएतनाम की विदेश मंत्री का भारत का दौरा हुआ। तय राजकीय कार्यक्रम के अनुसार उन्हें लालकिला और गाँधी जी की समाधि दिखाई गई। लेकिन ये दिखाते समय उन्होंने पूछा–'शिवाजी महाराज की समाधि कहाँ है?' तब भारत सरकार सन्न रह गई और उत्तर दिया गया– 'रायगढ़' विएतनाम की विदेश मंत्री रायगढ़ पहुँची और शिवाजी महाराज की समाधि का दर्शन किया। उसके बाद उन्होंने रायगढ़ की मिट्टी उठाई और अपने बैग में डाल ली। इसका कारण पत्रकारों द्वारा पूछे जाने पर मंत्री महोदय ने कहा कि यह मिट्टी शूर वीरों की है। इसी मिट्टी में शिवाजी जैसे महान चरित्रवान राजा का जन्म हुआ है। अपने देश वापस जाकर यह मिट्टी मैं अपने देश की मिट्टी में मिलाऊँगी, जिससे हमारे देश में भी ऐसे ही शूर वीर पैदा हों।

(साभार : कल्याण)

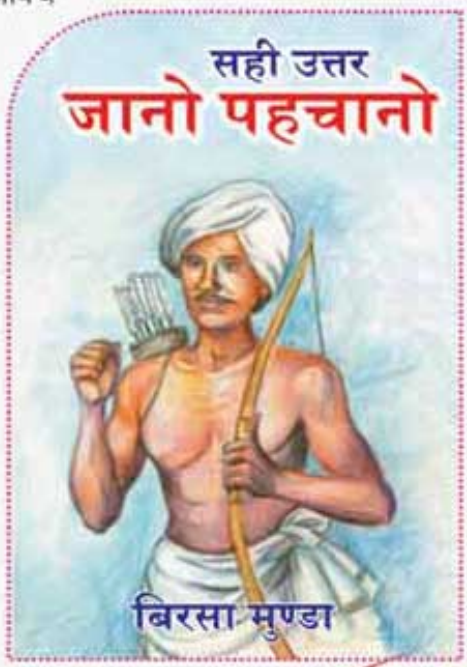

अनूठा उपहार

कहानी : डॉ.उषा यादव

'पर्यावरण और हम' विषय पर छठी से आठवीं कक्षा की बच्चियों के लिए जिलास्तरीय प्रतियोगिता घोषित हुई। छठी कक्षा में पढ़ने वाली महक इस घोषणा को सुनकर रोमांचित हो उठी। उसे चित्र बनाने का बहुत चाव है और रंगों से खेलना अब उसका पहला शौक बन चुका है। अपने विद्यालय में उसने कई पुरस्कार जीते हैं। नगर स्तर पर भी दो बार पुरस्कृत हुई है, पर जिला स्तरीय प्रतियोगिता के नाम से....

सच, डर तो लगता ही है। आखिर बच्ची है। इतना बड़ा जिला है आगरा। आस-पास के शहरों, कस्बों गाँवों में न जाने कितने पूर्व माध्यमिक विद्यालय होंगे। अखबारों ने सब जगह प्रतियोगिता की सूचना पहुंच दी है। वैसे भी आयोजकों ने सब जगह पत्र भेजे हैं। दूर-दराज से बच्चियां आएंगी। चित्र बनाएंगी। अपनी कल्पना को कागज पर उतारेंगी। रंगों से सजीव करेंगी। पता नहीं ऐसे में वह कहीं टिक भी पाएगी या नहीं।

एक बार तो महक के मन में यही आया कि वह प्रतियोगिता में भाग न ले। कक्षाध्यापिका के पास जाकर अपना लिखा हुआ नाम कटवा दे। कोई बहाना बना देगी उस दिन जरूरी काम से बाहर जाना है, प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकेगी।

पर इस झूठ के लिए मन तैयार न हुआ। यह तो खेल शुरु होने से पहले ही हार मान लेने वाली बात हो गई। जब उसे कला से इतना प्रेम है, तो आगे बढ़कर प्रतियोगिता में भाग लेना चाहिए। पुरस्कृत हो या न हो, इसकी क्या चिंता? आखिर सैकड़ों बच्चियां भाग लेंगी। दूर-दूर से आएंगी। सभी तो इनाम लेकर नही लौटेंगी। प्रथम, द्वितीय, तृतीय के बाद ग्यारह सांत्वना पुरस्कार हैं। सिर्फ चौदह बच्चियां उनकी हकदार होंगी। फिर भी हर स्कूल में दो-दो बच्चियां भेजी जा रही हैं। सैकड़ों की तादात हो जाएगी। अपने विद्यालय से जब उसे चुन लिया गया है, तो पूरे उत्साह से उसे प्रतियोगिता में भाग लेना चाहिए। हार की संभावना से डरकर कदम पीछे हटाना उचित नहीं।

बस, महक ने अपना मन पक्का कर लिया। उत्साह से भरकर वह घर में इस विषय पर चर्चा करने लगी। पिताजी से कहकर नया रंगों का बाक्स मंगाया, नई पेंसिल मंगाई। रोज शाम को चित्र बनाने का अभ्यास भी करने लगी। उससे डेढ़ साल बड़े भाई मयंक को उसकी यह तेजी तनिक नहीं सुहाई। वह मन ही मन

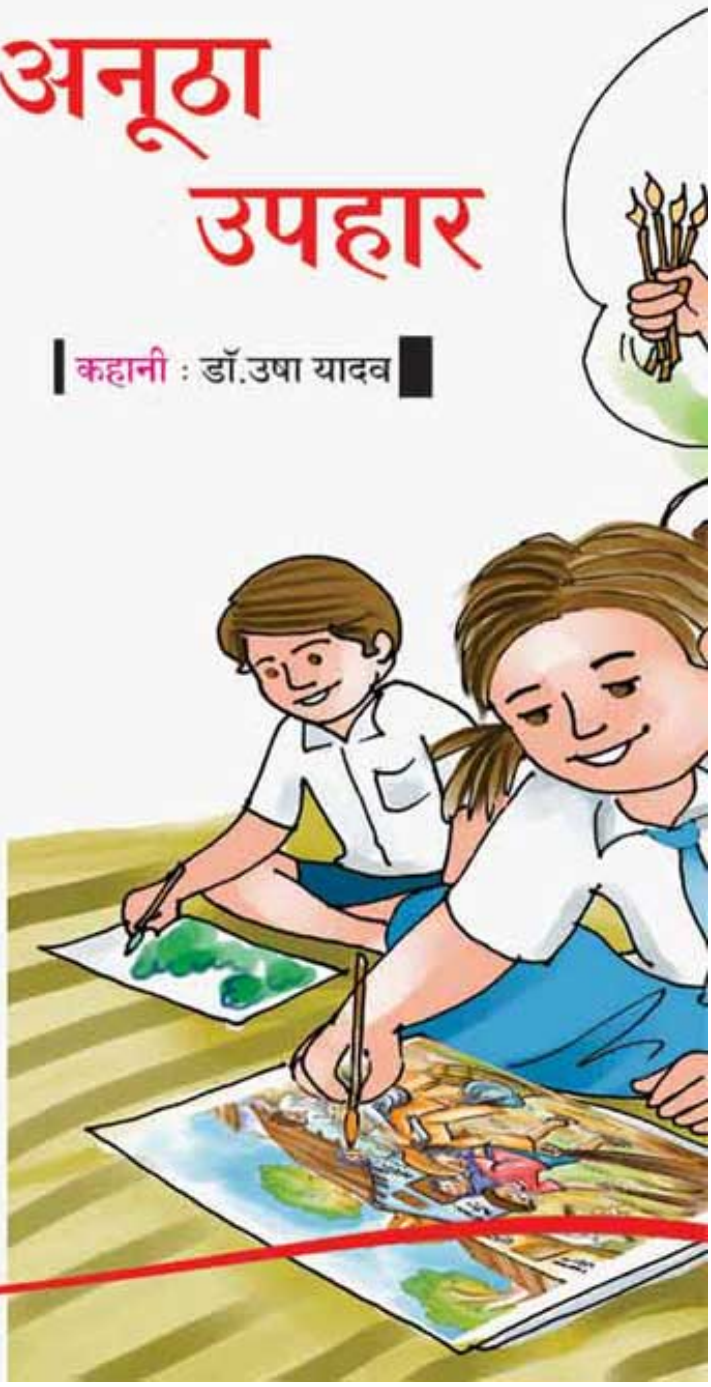

छोटी बहन से जलता था। उम्र में डेढ़ वर्ष बड़ा होने पर भी अभी छठी कक्षा में ही पढ़ रहा था। विद्यालय अलग थे, पर दोनों की किताबें एक जैसी थीं। परीक्षा होने पर जब महक के अंक ज्यादा आते, तो वह कुढ़कर रह जाता था। उसका बस चलता तो वह बहन का परीक्षा फल फाड़कर फेंक देता। पर माँ–पिताजी के डर से ऐसा करना संभव न था। जैसे–तैसे उसके अच्छे अंकों को झेल भी ले, पर यह जब–तब किसी चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेकर पुरस्कार जीतना तो मयंक बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं कर पाता था। इस बार भी वह भगवान से यही मनाने लगा कि प्रतियोगिता वाले दिन महक को इतना तेज बुखार चढ़ जाए कि बिस्तर से पांव तक नीचे न उतार सके। फिर देखेगा वह, बहन जी कैसे प्रतियोगिता में भाग लेती हैं?

पर मयंक के बुरा मानने से क्या होना था?

प्रतियोगिता का दिन आया और महक सही सलामत बिस्तर से उठ खड़ी हुई। पिछली शाम को ही उसने अपनी सारी तैयारी कर ली थी। पेंसिल, रंग, रबड़ एक बस्ते में रख लिए थे। कागज प्रतियोगिता स्थल पर ही मिलना था।

निर्धारित समय से आधा घंटा पहले ही महक घर से निकल गई। संयोग की बात थी, पिताजी दो दिन पहले कार्यालय के काम से बाहर चले गए थे। माँ के पास सुबह सुबह नानी का फोन आ गया कि अचानक अस्वस्थ हो जाने की वजह से नानाजी को अस्पताल में भर्ती करना पड़ा है। वैसे चिंता की कोई बात नहीं हैं, क्योंकि समय पर इलाज शुरू हो जाने से तकलीफ काबू में है। पर माँ तो फोन सुनते ही घबरा गई और तुरंत नानी के यहां जाने के लिए तैयार हो गईं। जल्दी–जल्दी कुछ अल्पाहार बनाकर मेज पर रख दिया और बच्चों को दिन में संभलकर रहने की सीख देकर घर से निकल गई। कह गईं, शाम तक जरूर घर लौट आएंगी। चूंकि रविवार का दिन था, विद्यालय की छुट्टी थी, इसलिए मयंक पर ही घर की देख–रेख की जिम्मेदारी आ गई।

जैसे ही महक अपना बैग लेकर घर से निकली, मयंक की निगाह उस प्याली पर पड़ी, जिसमें उसकी बहन ने अपने ब्रश भिगो रखे थे। नानी के फोन की वजह से चूंकि घर का माहौल भारी हो गया था, माँ घबरा गई

थीं, इसलिए महक भी अनमनी हो गई थी। उसे प्रतियोगिता के लिए घर से निकलते समय प्याली से अपने ब्रश निकालने की याद नहीं रहीं। सिर्फ बाकी सामान सहित वह घर से निकल गई थी। अब प्याली में पड़े उसके चारों ब्रश देखकर मयंक की आंखें चमक उठीं। उसे मन ही मन गहरा संतोष मिला– वाह! मजा आ गया। अब देखता हूं बहन जी कैसे प्रतियोगिता में भाग लेती हैं। कई दिन से इतराई हुई थीं। जमीन पर पांव नहीं पड़ रहे थे। सोच रही होंगी, पहला इनाम इन्हीं को तो मिलने जा रहा है। अब प्रतियोगिता शुरु हो जाने पर जब बस्ते में ब्रश न पाकर कैसी चुहिया सी शक्ल निकल आएगी। मजा आ जाएगा। आस–पास बैठी सभी अजनबी लड़कियों में भला कोई अपना ब्रश देने लगी? उस समय किसी से कोई चीज मांगने की इजाजत भी नहीं होती। अपने सामान से ही काम चलाना होगा। बस, कुछ देर बैठकर रुआंसा चेहरा लेकर महक बहन जी घर लौट आएगी। तब खुशी से ताली बजाते हुए उन्हें छेड़ेगा वह, 'क्या हाल रहा प्रतियोगिता का? दो घंटे का समय मिला था। क्या तुमने सिर्फ दस मिनट में अपना चित्र बना दिया? जमा करके लौट भी आई?'

खुशी से पागल हो उठा था मयंक।

पर पता नहीं क्या बात थी कि मेज पर रखे नाश्ते की तरफ हाथ बढ़ाने का उसका मन न हुआ। बहन का रुआंसा चेहरा रह–रहकर आँखों में कौंध रहा था। अपनी छोटी बहन से हर साल कलाई पर राखी बंधवाता है वह। उपहार के साथ रक्षा का वचन देता है। आज उसकी बहन संकट में है और वह घर में निश्चित बैठा है? छिः कैसा भाई है वह? अपनी बहन को घिर रहे संकट से बचाने के लिए क्या कुछ करना उसका फर्ज नहीं है?

अगले ही पल मयंक ने प्याली से वे चारों ब्रश

दिमागी कसरत

चाँद मो. घोसी

मित्रो, जरा अपने दिमाग पर जोर देकर पता लगाएं कि चित्र में कौन–सी फल या सब्जी कितनी बार आई है?

उत्तर : सेव–४, शलगम–३
टमाटर–४, आम–५

निकाले और घर में मुख्य द्वार पर ताला लगाकर सड़क पर आ गया। साइकिल उसके पास थी। इतनी तेज पैडल चलाए कि रास्ते की दूरी दस मिनट में नाप ली। दौड़ते हुए प्रतियोगिता स्थल पर पहुंचकर उसने आयोजकों से पूछा–'प्रतियोगिता शुरु हो गई है?'

''अभी पांच मिनट बाकी हैं। लेकिन तुम क्यों आए हो बेटा? यह प्रतियोगिता केवल बच्चियों के लिए हैं।''

''महोदय, मेरी बहन महक इसमें भाग लेने के लिए आई है। नारायणी कन्या माध्यमिक विद्यालय, आगरा की कक्षा छः की छात्रा है वह। अपने ब्रश घर में भूल आई हैं। कृपया इन्हें उसके पास पहुंचा दें।''

''ठीक है।'' कहते हुए आयोजकों में से एक ने वह ब्रश थाम लिए और 'कुमारी महक, कक्षा छः नारायणी कन्या माध्यमिक विद्यालय, आगरा' दोहराता हुआ वहां से चला गया।

मयंक तब तक वहीं खड़ा रहा, जब तक उस व्यक्ति ने लौटकर बता नहीं दिया कि भेजी हुई सामग्री बच्ची को दे दी गई है।

''धन्यवाद महोदय।'' मयंक ने माथे का पसीना पोंछते हुए कहा और अपनी साइकिल से घर लौट पड़ा।

अगले सप्ताह प्रतियोगिता का परिणाम घोषित हुआ, तो पहला पुरस्कार नारायणी कन्या माध्यमिक विद्यालय की कक्षा छः की छात्रा कुमारी महक को मिला था।

महक गद्‌गद् थी–''भैया, सिर्फ तुम्हारी वजह से....''

मयंक पहली बार अपनी बहन की किसी सफलता पर ईर्ष्याग्रस्त होने की जगह सच्चे मन की खुशी अनुभव कर रहा था। मुंह से कुछ नहीं बोला वह, पर दौड़कर चौराहे के 'नितिन मिष्ठान भंडार' से बूंदी के लड्डू ले आया और उसमें से एक बहन के मुंह में ठूंस दिया। उसका रोम–रोम कह रहा था, 'नन्ही, हर साल मेरी कलाई पर राखी बांधती हो तुम। पिताजी के दिए रुपए तुम्हें थमा देने के सिवाय और क्या करता हूं मैं इस बार पहली बार समय पर प्रतियोगिता स्थल पर तुम्हारे ब्रश पहुंचाए हैं। संकट की घड़ी में तुम्हारे लिए यदि इतना भी न करता, तो क्या खुद को राखी बंधवाने का सही हकदार साबित कर पाता?'

महक अपनी सफलता पर जितनी खुश थी, मयंक उससे ज्यादा प्रसन्न उसे अनूठा उपहार देकर था।

● आगरा (उ.प्र.)

पुस्तक परिचय

साहित्यानुरागियों के लिए कुछ पुस्तकें

मूल्य १७०/-

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना के - बालकाव्य में भारतीय संस्कृति

डॉ. सुनीता द्वारा लिखित इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति के प्रति बाल साहित्य की भूमिका का महत्व एवं जीवन मूल्यों की पुनर्प्राप्ति पर शोधपूर्ण उल्लेख हैं।

प्रकाशक- विभोर प्रकाशन, ४९वीं होस्टिंग्स रोड, सर्किट हाऊस के पास, इलाहाबाद (उ.प्र.)

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार **डॉ. बानो सरताज** द्वारा लिखित **माडर्न पब्लिशिंग हाउस ९ गोला मार्केट दरियागंज नई दिल्ली ११०००२** द्वारा प्रकाशित भारतीय बाल महिलाओं के महत्व को रेखांकित करनी गौरवपूर्ण पुस्तकें।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएं

मूल्य २५०/-

भारत की शूरवीर महिलाएं

(विविध क्षेत्रों में)

मूल्य २५०/-

भारत की इक्सवीं प्रथम महिलाएं

मूल्य २००/-

भारत की इक्यावन प्रथम महिलाएं

प्रकाशक
अयन प्रकाशन
१/२०, महरौली, नई दिल्ली ३०

मूल्य १६०/-

अ से आलेख

श्री धनसिंह मेहता 'अनजान' द्वारा संपादित एवं संग्रहित हिन्दी बाल साहित्य के चयनित लेखकों के महत्वपूर्ण आलेखों का संकलन।

प्रकाशक- चन्द्रकांत मेहता, ई-४३, कुर्मांचल नगर, लखनऊ (उ.प्र.)

मूल्य ७५/-

रंग भरो

● राजेश गुजर

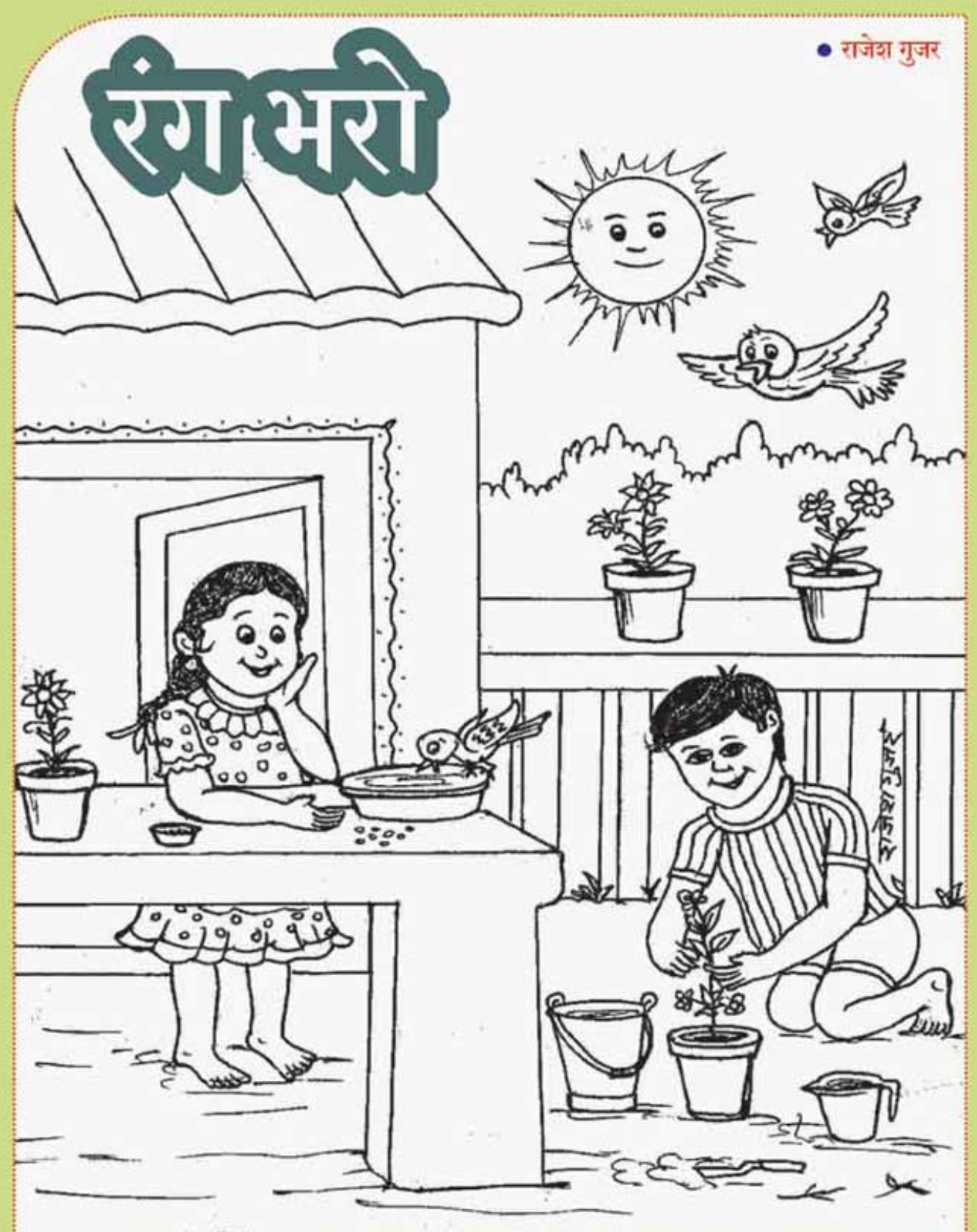

बचना है तो बदलना होगा

कहानी : मनोहर चमोली

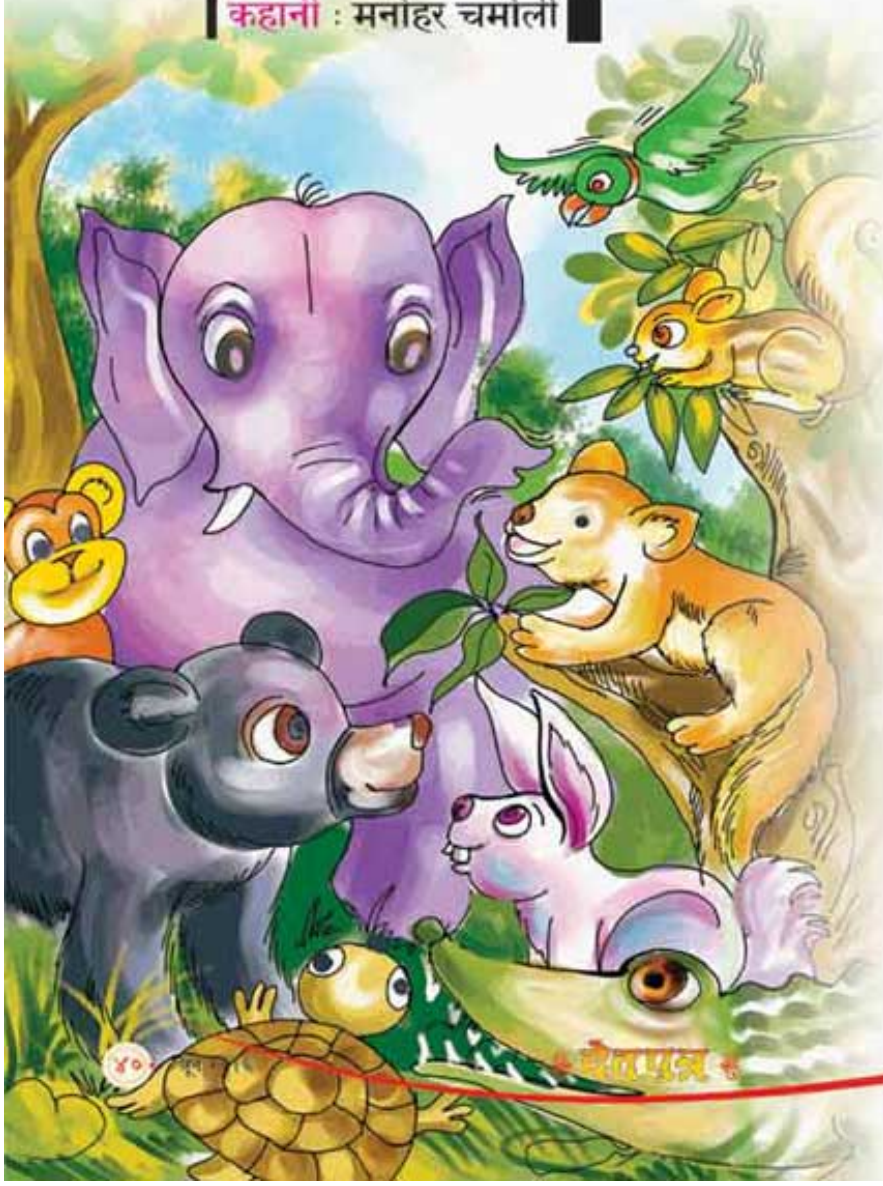

हाथी सुबह से ही घूम रहा था। चारों और सन्नाटा था। यह बात उसे अजीब लगी। वह जंगल के उस स्थान पर जा पहुंचा जहां अक्सर सभी मिल जाते थे। पीपल का विशालकाय पेड़ और पास में ही जल धारा। पशु-पक्षी सहित जलचर भी वहां मिल जाते हैं। यहां भी कोई नहीं था। हाथी चिंघाड़ा-''घरों में क्यों दुबके हो? मस्ती करो। घूमो-फिरो। वैसे भी इस बार मानसून देर से आएगा। चलो आओ। कहीं दूर घूमने चला जाए।'' कछुआ बोला-''चलो अच्छा ही है। बारिश आती है तो बिलों में पानी भर जाता है।'' बंदर, तोता, मगरमच्छ, कछुआ सहित भालू भी पहुंच गए। हाथी ने फिर कहा-''आओ। चलो कहीं घूमने चलते हैं।'' कछुआ बोला-''जाना कहां है?'' हाथी ने यहाँ वहाँ देखते हुए जवाब दिया-''कहीं मैदान की ओर चलते हैं।'' भालू ने कहा-''नहीं। मैदान में तो बेहद गर्मी पड़ रही है। मैदानों में इन दिनों पारा छियालीस डिग्री के आस-पास चढ़ जाता है।'' हाथी ने कहा-''तो ठीक है। ऐसा करते हैं फिर किसी पहाड़ी पर चल पड़ते हैं।''

बंदर ने कहा- ''वहाँ जाकर क्या करेंगे। इस जंगल का तापमान और किसी भी पहाड़ी का तापमान में कोई अधिक अंतर नहीं रह गया है। पहाड़ के जंगलों में भी अब पहले की तरह बर्फ नहीं गिर रही है।'' हाथी ने कहा-''ओह! तो ऐसा करते हैं कि वरुणावत पर्वत की ओर चल पड़ते हैं। चूहा हंसते हुए हाथी से कहने लगा-''पता है बेमौसम में हुई अचानक मूसलाधार बारिश से कई जगह पहाड़ दरक गए हैं। चट्टाने खिसक गई हैं। भयंकर भूस्खलन हो गया है। किस रास्ते जाएंगे?'' तभी वहां लाल पांडा आ गया। वह बोला-''क्या बात है। सब कुछ परेशान से लग रहे हैं।''

हाथी लाल पांडा से बोला-''आओ! बस तुम्हारी ही कमी थी। कहीं घूमने की योजना बना रहे थे, लेकिन ये सब हर किसी जगह को जाने लायक नहीं बता रहे हैं।'' लाल पांडा हंस पड़ा। हँसते-हँसते कहने लगा-''ये सही तो कह रहे हैं। इस धरती में कोई जगह अब रहने लायक बची ही कहां है।'' हाथी ने चिढ़ाते हुए कहा-''वाकई क्या पूरी धरती ही रहने लायक नहीं बची है? वैसे भी तुम तो खूब पढ़ते लिखते हो। यहां वहां जाते रहते हो। बोलो-बोलो।'' लाल पांडा ने चौंकते हुए पूछा-''अरे! तुम्हें कैसे पता? मैं यही कहने

वाला था। वाकई धरती अब रहने लायक नहीं रही। यदि अब भी कुछ ठोस उपाय नहीं किए गए तो विनाश तय है हमारा भी।'' हाथी सहित सब चौंक पड़े।

तोता बोल पड़ा–''अब कुछ ज्यादा ही बोल गए हो। कुछ कम नहीं हो सकता ? ये ज्यादा नहीं हो गया।'' लाल पांडा गंभीर होते हुए बोला–''वाकई कुछ ज्यादा ही हो गया है। मुझे ही नहीं हम सब को कम करना होगा।'' बंदर ने नजदीक आते हुए लाल पांडा से कहा–''पहेलियां मत बुझाओ। साफ–साफ कहो। आखिर तुम कहना क्या चाहते हो?'' लाल पांडा ने लंबी सांस छोड़ते हुए कहा–''यह सब ग्लोबल वार्मिंग का किया धरा है।'' हाथी ने सूंड हवा में लहराई–''मुझसे मिलवाओ। मैं उसे अपने पैरों से कुचल दूंगा। सूंड से उठा–उठा कर पटक दूंगा।'' लाल पांडा ने हंसते हुए कहा–''ये ग्लोबल वार्मिंग आपकी देन है। मेरी देन है। हम सब की देन है। किसे–किसे कुचलोगे?'' चूहा बोल पड़ा–''ओह! ग्लोबल वार्मिंग यानि धरती का तेजी से गरम होते जाना। धरती का तापमान बढ़ता जा रहा है। मतलब यह कि हमारी धरती की सेहत बिगड़ती जा रही है।''

लाल पांडा ने कहा– ''बिलकुल। तुम्हें तो यह सब पता है। यह सब ग्रीन हाऊस का प्रभाव है। हमने धरती और उसके आस–पास मौजूद गैसों को असंतुलित कर दिया है। धरती के ऊपर की परत लगातार मोटी होती जा रही है।'' हाथी ने झट से पूछा–''यह परत मोटी क्यों होती जा रही है?'' अब चूहा बोला–''हमारी धरती के प्रकाश से ऊर्जा लेती है। जब सूरज की किरणें पृथ्वी पर आती हैं तो इनका कुछ हिस्सा पृथ्वी के वातावरण में ही रह जाता है। इसी प्रक्रिया में वातावरण की कुछ गैसें कार्बन डाई आक्साइड, मीथेन और जल वाष्प पृथ्वी पर एक परत बना लेती हैं। इन्हें ही ग्रीन हाउस गैस कहा जाता है। जिस तरह हरे रंग का कांच ऊष्मा को अंदर आने से रोकता है उसी तरह ये गैसें पृथ्वी के ऊपर परत बनाकर अधिक ऊष्मा से धरती की रक्षा करती है। लेकिन अब हमारी वजह से ये परत मोटी होती जा रही है। परिणाम यह हो रहा है कि कभी अधिक गर्मी पड़ रही है तो कभी अधिक बारिश। कहीं सूखा हो रहा है तो कहीं अत्यधिक सर्दी पड़ने लगी है। वहीं धरती का तापमान बढ़ता जा रहा है।''

हाथी ने पूछा–''हमारी वजह से? मतलब?'' अब खरगोश ने बताया–''लगातार उद्योग बढ़ते जा रहे हैं। वाहनों की संख्या बढ़ रही है। धरती का तापमान बढ़ रहा है। डीजल–पैट्रोल की खपत हो रही है। कार्बनडाइआक्साइड वातावरण में बढ़ रही है।'' बंदर ने पूछा–''आपने अभी कहा कि धरती नष्ट हो जाएगी। उसका मतलब तो यह हुआ कि हमारा जीवन भी खतरे में हैं?'' लाल पांडा ने कहा–''बिलकुल। धरती से कई वनस्पतियां, जीव–जन्तु लुप्त होते जा रहे हैं। बर्फ तेजी से पिघल रही है। समुद्र का जल स्तर बढ़ता जा रहा है। यह सब भयंकर परिणाम के संकेत हैं।'' तोता बोला– ''लाल पांड फिर् अब क्या होगा? मतलब कि क्या करना होगा?'' चूहा बोला–''अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे। वाहनों के इस्तेमाल से अधिक पैदल जाने की आदत डालनी होगी। बिजली पर निर्भरता कम नहीं कर सकते तो बिजली का उपयोग सोच–समझ कर करना होगा। कचरा रिसाइकिल करना होगा।''

कछुआ बोला–''धरती ही नहीं बचेगी तो क्या समुद्र और क्या नदी–तालाब। कुछ नहीं बचेगा। हम सभी को मिलकर कुछ ठोस करना होगा।'' गिलहरी ने कहा–''हम सबको अपनी जीवन शैली बदलनी होगी। प्रकृति से छेड़छाड़ बंद करनी होगी। प्रकृति से छेड़छाड़ बंद करनी होगी।'' बंदर ने कहा–''बचना है तो खुद को बदलना होगा।'' हाथी बोला–''अरे! धरती ही नहीं रहेगी तो हम क्या खाक बचेंगे। मैं तो चला।'' लाल पांडा ने पूछा–''कहाँ?''जवाब मिला–''सबसे पहले पौधों की नर्सरी तैयार करता हूं। पेड़ तो बाद में लगेंगे।'' बंदर ने आवाज लगाई–''अरे! सुना नहीं क्या? यह सब हम सभी को करना होगा। मैं भी आता हूं।'' खरगोश बोला–''मैं भी आता हूं।'' सब बोले–''हम भी आते हैं।'' हर कोई हाथी के पीछे–पीछे चल पड़ा।

● **पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)**

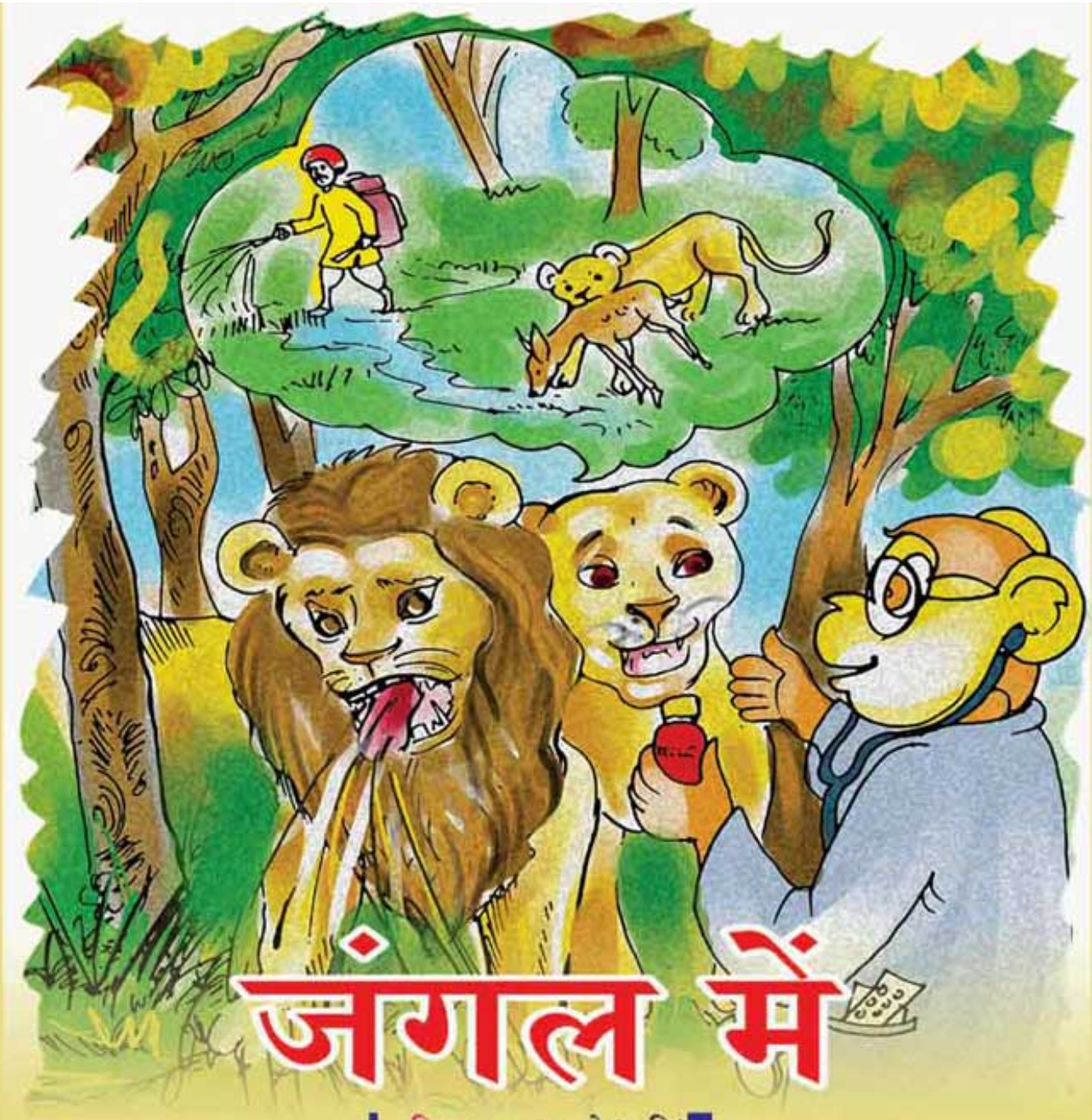

जंगल में

कविता : कुसुम खरे 'श्रुति'

पेट दर्द से शेर तड़पता, वैद्य बुला दो यार,
उल्टी होने लगी शेर को दस्त लगे दो-चार।
बोला बंदर वैद्य, शेर से क्या खाया था तुमने?
लाई शेरनी हिरण शिकार वही लिया था हमने
किया परीक्षण घास भरा मुंह पाया मरे हिरण का।
मरे कीट थे लगे घास में असर कीट नाशन का।
उसी दवा से हिरन मरा था कहा वैद्य बंदर ने।
पानी संग पीने को दी तब दवा वैद्य बंदर ने।
पानी में थी भी मिली हुई थी दवा खेत की बहकर।
हाल किया बेहाल प्रकृति का जहरी दवा छिड़क कर।
फल सब्जी हम खाएं धो कर, पशु पक्षी कैसे धोएं?
बंद करो छिड़काव दवा, फिर धरती उर्वर होए।

• दमोह (म.प्र.)

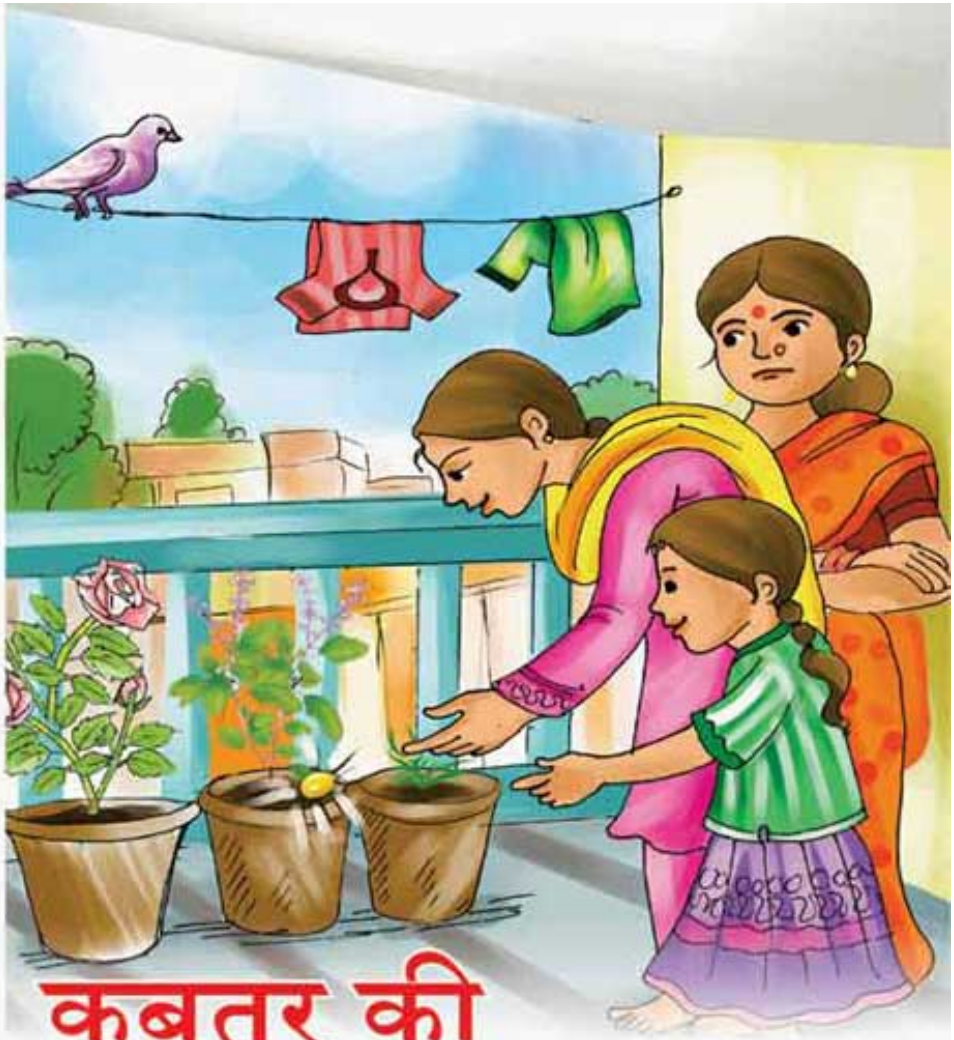

कबूतर की समझदारी

बाल प्रस्तुति : आलिशा सक्सेना

सुबह जब मैं सोकर उठी तो बालकनी में ताजी हवा लेने के लिए आई। तभी मैंने देखा कि बालकनी में रखे तुलसी के गमले में कुछ पीला गोल सा रखा है मैंने पास जाकर देखा तो एक अण्डा था। अभी सोच ही रही थी कि ये किसका है तभी एक कबूतर फड़फड़ता हुआ मुंडेर पर आ बैठा। मैं समझ गई कि ये इसका है मैंने घर पर शोर मचाकर सबको बुला लिया। माँ देखो अण्डा, मेरी छोटी बहन आशी बहुत खुश होकर उस अण्डे को देख रही थी कि माँ बड़बड़ाने लगी ''अरे राम अब मैं तुलसी में जल कैसे चढाऊँगी? वो रोज तुलसी में जल चढ़ाती थी। मुझे डर लग रहा था कि वह कही इस अण्डे को फेंक न दे। क्योंकि जल चढ़ाने से अण्डा खराब हो सकता था। पर किया क्या जाए। तभी आशी ने मुझे एक तरकीब बताई। दीदी हम नीचे बगीचे में से घास के तिनके लाकर घोंसला बनाते हैं और अण्डे को उसमें रख देते हैं पर मुझे मेरी दीदी की एक बात याद आ रही थी कि पक्षियों के अण्डे ओर बच्चों को हाथ नहीं लगाना चाहिए क्योंकि फिर पक्षी उसे नहीं अपनाते हैं। हम लोगों ने घास का घोंसला तो बना लिया पर अण्डे को उसमें कैसे रखे? आखिर जैसे तैसे हमने अण्डा रख भी दिया। अब हमें चिंता हो रही थी कि कबूतर उसे अपनाता है कि नहीं। हम छुप गए थोड़ी देर बाद कबूतर आया और घोंसले को देखकर उड़ गया हमारी सारी मेहनत बेकार हो गई। माँ की आवाज आई कि चलो भोजन कर लो हम भोजन कर पढ़ने बैठ गए। दोपहर में आशी ने चुपचाप से जाकर देखा तो कबूतर अण्डे पर बैठा था।

हमने रात को सारी कहानी पिताजी को सुनाई तब माँ बोली पता नहीं इतने सारे गमलों में से उसने तुलसी वाला गमला ही क्यों चुना। तब पिताजी ने कहा देखो कबूतर भी बहुत समझदार हैं उसे पता है कि धूल धुए की वजह से सारा वातावरण खराब हो गया है। ऐसे में तुलसी का पौधा ही है जो वायु को और वातावरण को शुद्ध रखता है। कबूतर जानता था इसलिए उसने पौधे में अण्डा दिया ताकि उसका आने वाला बच्चा स्वस्थ हो।

● अहमदाबाद (गुज.)

मालती शर्मा 'गोपिका' पुणे

देवपुत्र का धरोहर विशेषांक अभी अभी मिला। बधाईयाँ ! देवपुत्र का धरोहर विशेषांक तो स्वयं में एक धरोहर है बाल साहित्य जगत की। मेरी याद में ऐसा अंक किसी बाल साहित्य की पत्रिका का नहीं जिसमें इतने वरद साहित्यकारों से बच्चों के लिए लिखने वाले बाल साहित्यकारों से भेंट हो सके। मैं तो बचपन में पहुँच गई। इसके साथ एक मनुहार भी है इस अंक में पृष्ठ सीमा वश छूटे वरद साहित्यकारों का बाल साहित्य देते हुए एक और धरोहर विशेषांक निकालें।
पुनः बधाइयों के साथ –

मधुसूदन साहा, राउरकेला (उड़ीसा)

देवपुत्र का धरोहर विशेषांक अद्‌भुत एवं अभूतपूर्व है। वरिष्ठ पूर्वज बाल साहित्यकारों की रचनाओं को पढ़ने का सुख आपने न केवल बच्चों को दिया है वरन् बड़ों के लिए भी उपलब्ध कराया है। आखिरकार हमारे पूर्वज बच्चों के लिए क्या सोचते थे और कैसी रचनाओं का सृजन कर उनके भविष्य को सुधारना चाहते थे, यह जानना हमारे लिए भी जरूरी है। अंक के लिए अशेष बधाईयाँ।

राहुल परमार, भीनमाल (राज.)

यह देवपुत्र मासिक पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। इसका हर अंक मैं पढ़ता हूँ, यह सभी को पढ़ाता हूँ और अपने मित्र व सहपाठियों को भी पढ़ाता हूँ। इस पुस्तक में नई–नई खोज की जानकारी प्राप्त होती है और इस पत्रिका से मनोरंजन के साथ–साथ मानसिक विकास होता है व इस पुस्तक में सभी बच्चे अपनी प्रतिभा प्रकट करते हैं। इस पत्रिका से सामान्य ज्ञान भी प्राप्त होता है। मैं हर बार अगले अंक का इंतजार करता हूँ।

आशुतोष कर्मा, खण्डवा (म.प्र.)

मैं देवपुत्र का नियमित पाठक हूँ, मुझे देवपुत्र की हर कहानी बहुत ही अच्छी लगती है और कविता भी बहुत अच्छी लगती है। इसमें चुटकुले भी बहुत अच्छे लगते हैं। देवपुत्र में बड़ों के लिए भी बहुत कुछ है। मेरे घर पर मेरी माँ भी इसे पढ़ती है।

शिवराज सिंह गौड़, खजुरी गौड

देवपुत्र बाल पाठकों के लिए ही नहीं अपितु बड़ों के लिए भी सार्थक सिद्ध हो रही है।

हर महीने की पहली तारीख को देवपुत्र का पूरे परिवार को बड़ी बेसब्री से इंतजार रहता है।

रूपसिंह महरौली, ललितपुर (उ.प्र.)

विज्ञान दिवस अंक पढ़ा। बड़े भैया ने अपनी बात में बच्चों को सरल छन्दों का उद्‌बोधन कर नेक सलाह दी है। विज्ञान पर ढेर सारी सामग्री देकर विषय की ओर उन्मुख और विदेशी के सामने स्वदेशी, विज्ञान हो अपनी भाषा में, हर पल की कीमत लघु आलेख द्वारा वैज्ञानिक की महान देन को अलोकित किया तथा सरल रोचक भाषा में कविता कहानी देकर देवपुत्र को सुगन्धित किया है।

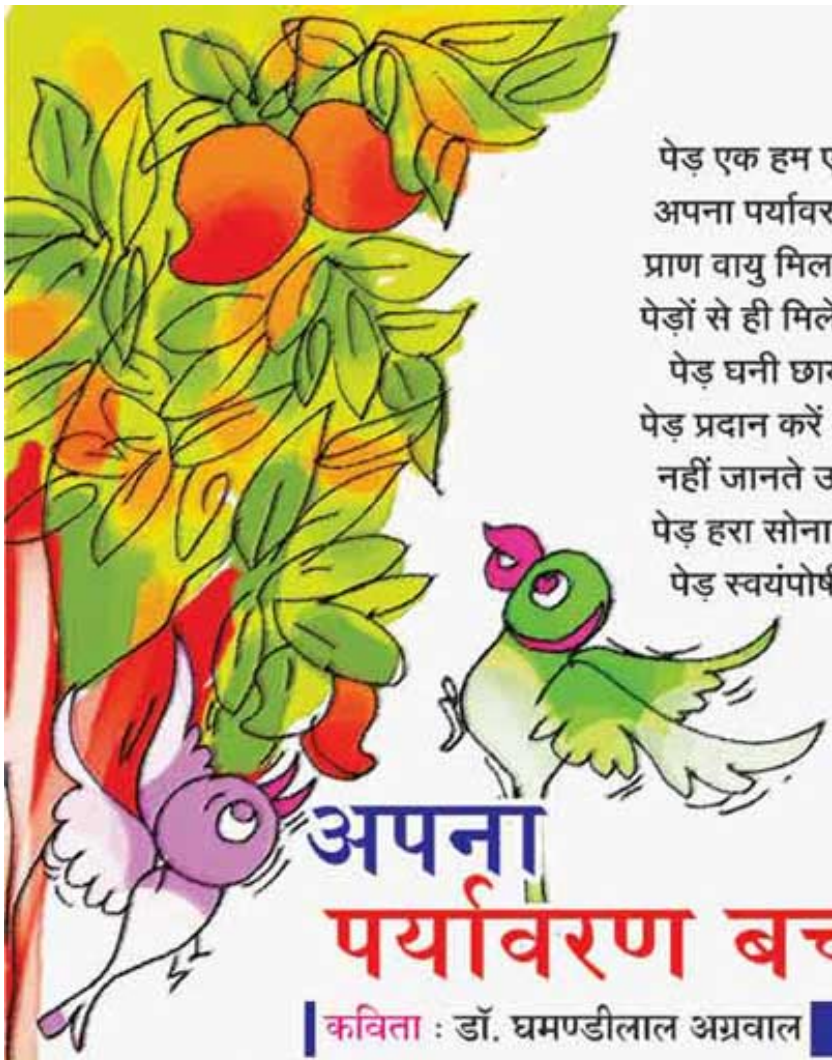

अपना पर्यावरण बचाएं

कविता : डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

पेड़ एक हम एक लगाएं
अपना पर्यावरण बचाएं।
प्राण वायु मिलती पेड़ों से
पेड़ों से ही मिले लकड़ियां
पेड़ घनी छाया देते हैं
पेड़ प्रदान करें औषधियाँ,
नहीं जानते उन्हें बताएं
पेड़ हरा सोना कहलाएं।
पेड़ स्वयंपोषी होते हैं
अपना भोजन स्वयं बनाते,
अन्य जीवधारी पेड़ों से
जीने की सामग्री पाते,
हम अपना कर्त्तव्य निभाएं
पेड़ों की संख्या फैलाएं।
पेड़ नहीं तो हम होंगे क्या?
कभी बैठ फुर्सत से सोचो
पेड़ों को मत काटो ऐसे
अपने बालों को मत नोचो,
पेड़ों से ही सब सुख पाएं
पेड़ हमें जीना सिखलाएं।
बहुत प्रदूषण अब समाज में
पेड़ इसे कम कर देते हैं,
औरों की खातिर मिट जाते
हर अभाव को पी लेते हैं,
घर, आंगन, उपवन महकाएं
पेड़ों की हम महिमा गाएं।

• गुरूग्राम (गुड़गांव) हरि.

दादाजी का नाम

कथा - चंदा सिंह

चित्रकथा - देवांशु वत्स

सूर्या फाउण्डेशन

बी- 3/330, पश्चिम विहार, नई दिल्ली - 110063
Tel.: 011-25262994,25253681 Email: suryafnd@gmail.com Website: www.suryafoundation.net.in

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका मुख्य उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए देश के तेजस्वी, लगनशील, धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना।

सूर्या फाउण्डेशन में **संघ संस्कारों** में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रूचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम तरूणों का प्रवेश हेतु इंटरव्यू होगा-

Under Graduate Trainee (UGT) / Graduate Staff Trainee (GST)

- **न्यूनतम योग्यता** - 12वीं में 50% अंकों से पास BCA, B.Sc., B.Com, BBA, BA में पढ़ रहे विद्यार्थी जो 1st Year IInd Year पास हों चुके हैं, या 2016 में होने वाली IIIrd Year (Final) परीक्षा देने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। कम्प्यूटर में कोई भी विशेष योग्यता प्राप्त आवेदक को प्राथमिकता दी जायेगी। **आयु 21 वर्ष** से अधिक न हो।
- Training की अवधि 2 महीने की रहेगी। जो " **सूर्या साधना स्थली** " सूर्या फाउण्डेशन कैम्पस में होगी। जिसमें कम्प्यूटर, इंग्लिश स्पीकिंग, मैनेजमेंट, स्किल डेवलपमेंट, प्राकृतिक चिकित्सा, योग, ध्यान, कराटे, विभिन्न खेल, फौजी ट्रेनिंग आदि का प्रशिक्षण मिलेगा। इस दौरान 3,000/- प्रतिमाह Stipend व फ्री भोजन तथा आवास रहेगा।
- सूर्या साधना स्थली की ट्रेनिंग के बाद एक साल के लिए On Job Training (OJT) पर रखा जाएगा जिसमें आवास और भोजन के साथ 5,000/- प्रतिमाह मानधन (Stipend) के रूप में दिया जायेगा।
- इस पूरी ट्रेनिंग के बाद 10,000/- प्रतिमाह का मासिक वेतन दिया जायेगा जिसमें performance को देखते हुए हर साल बढ़ोतरी की जायेगी। ट्रेनिंग पूरी होने के पश्चात देश के हित में, सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना, सामाजिक कार्यों या सूर्या के अन्य प्रकल्पों में जोड़ा जाएगा।
- SC, ST, OBC दलित, पिछड़े व वनवासी एवं North East (पूर्वोत्तर) के युवकों को प्राथमिकता दी जाएगी।

(आवेदन पत्र अलग कागज पर हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें)

पूरा नाम..... जन्मतिथि (अंकों में)..... Affix latest Photograph here

पिता का नाम.....

पिता का व्यवसाय.....मासिक आय.....

भाई कितने हैं (आप को छोड़कर) ..... बहनें कितनी हैं ..... जाति..... वर्ग.....

विवाहित / अविवाहित .....

पढ़ाई का विवरण (Mark Sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें).....

पत्र व्यवहार का पता.....पिन कोड.....टेलीफोन नं.....

NCC/NSS/OTC/ITC/ शीत शिविर/PDC(कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें).....शिविर में दायित्व सेवा भारती/ विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय/ छात्रावास या संघ या परिषद् अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे..... दायित्व.....

सूर्या परिवार में कोई परिचित है तो! नाम एवं विभाग.....

सूर्या फाउण्डेशन के इण्टरव्यू में पहले भाग ले चुके हैं तो वर्ष तथा कैडर का नाम.....

अपनी विशेष क्षमता, योग्यता, गुण एवं उपलब्धि अवश्य लिखें। इसके अतिरिक्त अपने विषय में कोई अन्य जानकारी देना चाहें तो अलग पेज पर लिखकर भेजें।

आवेदन की अंतिम तिथि : 30 जून 2016

बाल प्रस्तुति

चुटकुले

बच्चा– पिताजी, एक छोटा सा गेट–टू–गेदर है विद्यालय में।
पिताजी – अच्छा, कौन–कौन आएगा।
बच्चा – आप, मैं और प्राचार्य महोदय।

***

बच्चा – परीक्षा देकर निकल रहा था।
परीक्षक – कुछ किया भी है या यूं ही आ गए।
बच्चा– सर, मैं तो नाश्ता करके आया हूँ और आप?

***

सुरेश अपने बेटे के विद्यालय गया।
सुरेश पप्पू की अध्यापिका से– मेरा बेटा पढ़ाई में कैसा है?
अध्यापिका – बस ये समझ लो कि आर्य भट्ट ने शून्य की खोज इसके लिए ही की थी।

***

रमेश– तुम ये ईंट लिए क्यों फिर रहे हो?
सुरेश– कुछ नहीं यार, मैं अपना घर बेचना चाहता हूँ और ये उसका नमूना है।

कुमकुम सुराणा, मुख्त्यागरगंज

डाक्टर – रामू तुम्हारी एक किड़नी फेल हो गई है
रामू– पहले तो वह बहुत रोया फिर बोला कितने नम्बर से।

***

सोहन अपनी दादी का इलाज करवाने अस्पताल ले आया।
डाक्टर – सोहन तुम्हारी दादी के टेस्ट होगे।
सोहन– मेरी दादी तो अनपढ़ है वे कैसे टेस्ट देगी।

अर्पित गौतम, मुख्त्यारगंज

मोहन – कैसे सिद्ध करोगे कि पक्षियों की आँखें तेज होती हैं।
सोहन – क्योंकि पक्षी चश्मा नहीं लगाते।

***

पप्पू परीक्षा में शिक्षक से– श्रीमान आज क्या तारीख है?
शिक्षक – परीक्षा पर ध्यान दो।
पप्पू– श्रीमान्! मैं चाहता हूँ कि मेरे दिए जवाबों में कुछ तो सही हो।

प्रतिभा शर्मा, रांकोदा

एक चोरी चोरी करके भाग रहा था वह इन्सपेक्टर से रास्ते में टकरा गया।
इन्सपेक्टर – आखिर तू पकड़ा गया लेकिन मेरे पास हथकड़ी नहीं है।
चोर – मैं ले कर आता हूँ।
इंस्पेक्टर – मुझे बेवकूफ समझा है क्या? तुम भाग जाओगे, तुम यही रुको, मैं जाकर हथकड़ी लेकर आता हूँ।

अर्जित तिवारी, बिलानी (म.प्र.)

एक बार एक मिठाई वाले की दुकान पर भीड़ थी। तभी उनमें से एक आदमी ने पूछा– भाई साहब! आपकी मिठाईयों पर मक्खियाँ क्यों नहीं बैठती।
मिठाई वाले ने कहा– क्योंकि मैं इन मिठाईयों पर मक्खी मारने की दवा छिड़कता हूँ।

प्रीति बंजारे

पहेली पन्ना

सही उत्तर

(१)गाय की सींग
(२)सूरज चन्दा
(३)पानी में
(४)समोसा
(५)ई की मात्रा का
(६)सायकिल
(७)पेड़

धरती का क्या होगा?

कविता : रमेशचंद्र पंत

नदी किनारे एक गांव है,
और नीम की घनी छाँव है।
ऊपर कुछ पक्षी बैठे थे,
दादाजी नीचे लेटे थे।
नदी हुई बेहद पतली थी,
सूख गई काया लगती थी।
सोच रहे थे पक्षी सारे,
बैठ नीम पर साँझ-सकारे।
अगर नहीं भू पर जल होगा,
धरती का सोचो क्या होगा?
यदि यह बंजर हो जाएगी।
दुनिया कैसे बच पाएगी।

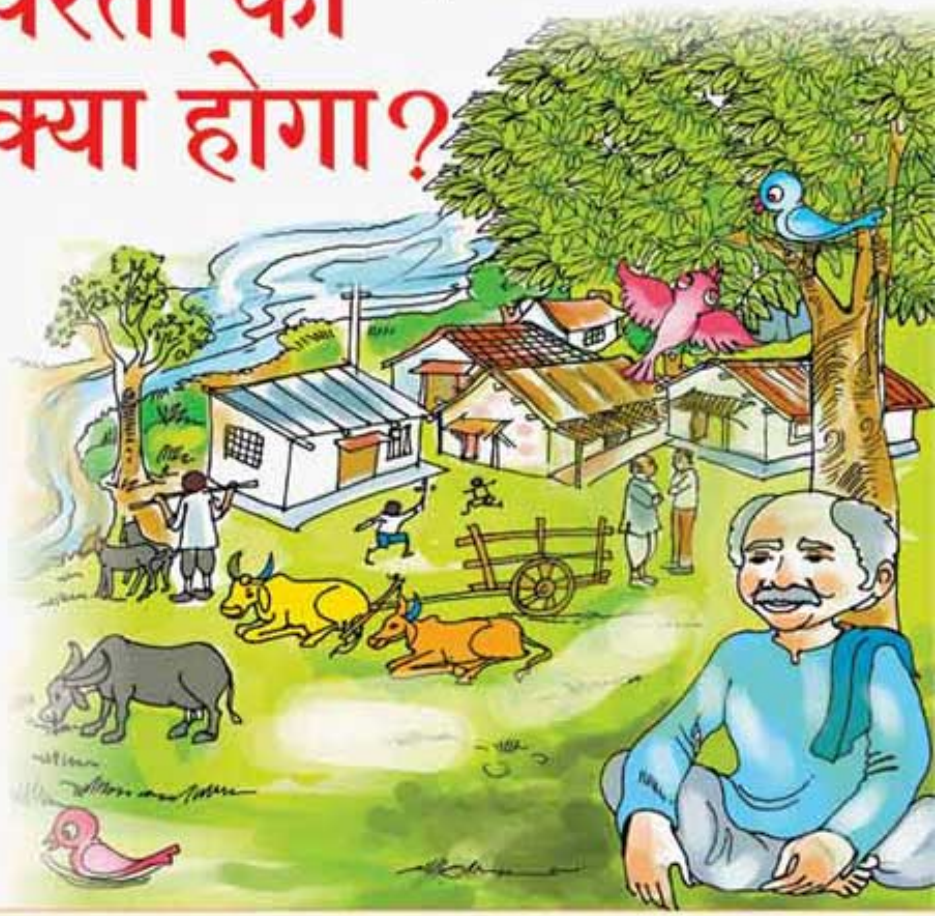

• द्वाराहाट (उत्तराखण्ड)

लघु कथा : गोविंद शर्मा

अपना काम

साहब के बंगले के बगीचे में रखी कुर्सियों पर कई लोग बैठे थे। सब उनके बाहर आने का इंतजार कर रहे थे। उनमें एक दस साल का लड़का भी था, जो पिता के साथ आया था। हवा चल रही थी और पास के पेड़ों के पत्ते टूट टूट कर गिर रहे थे। एक पत्ता टूटकर सीधा उस बच्चे की गोद में आकर गिरा। बच्चे ने उसे देखा, उठाया और थोड़ी दूर रखे कचरापात्र में डाल दिया। यह देखकर कुछ हैरान हुए तो कुछ हंस पड़े। एक ने कहा– 'यहां चारों तरफ पत्ते ही पत्ते बिखरे पड़े हैं। थोड़ी देर में सफाई वाला आएगा और सब बुहार ले जाएगा। तुम भी वह एक पत्ता यहीं फेंक देते। वह भी इसी तरह चला जाता।'

बच्चा बोला– 'काका जी मुझे तो यह सिखाया गया है कि अपना काम खुद करो। जो काम खुद कर सकते हो वह किसी और के भरोसे मत छोड़ो। हम अपने हिस्से की सफाई स्वयं कर लें तो हमें किसी सफाई करने वाले का इंतजार नहीं करना पड़ेगा।'

अब कोई बोला नहीं, पर उनकी की आंखों में उस बच्चे के लिए प्रशंसा का भाव था।

• संगरिया (राज.)

सूर्य भारती प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची

जीवनी साहित्य

अगस्त क्रांति के शहीद	नागेन्द्र सिन्हा	250.00
गदर पार्टी के शहीद	नागेन्द्र सिन्हा	150.00
आजादी के दीवाने	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
बलिदान भूमि भारत	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
देशभक्तों का बलिदान	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
देशभक्तों की शहादत	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
याद करेगा हिन्दुस्तान	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
हमारे वीर विप्लवी	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
शहीदे हिन्दुस्तान	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
शहीदों की स्मृति	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
हुतात्माओं की गाथा	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
शहीदी सफरनामा	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
काला पानी के शहीद	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
26/11 के बलिदानी	नागेन्द्र सिन्हा	125.00
मूर्धन्य शिरोमणि महाकवि कालिदास	नरेन्द्र लाहड़	150.00
अन्ना कितने खिलाड़ी कितने अनाड़ी	अजीत सिंह तोमर	100.00
बिखरे मोती	तेजपाल सिंह	60.00
जय श्री राम	नरेन्द्र सहगल	130.00
क्रान्तधर्मी सरदार पटेल	डॉ. सुभाष रस्तोगी	60.00
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	डॉ. सुभाष रस्तोगी	60.00
पंडित दीनदयाल उपाध्याय : महाप्रस्थान	तनसुखराम गुप्त	60.00
युगपुरुष वीर सावरकर	अशोक कौशिक	200.00
क्रांतिकारी दयानंद	अशोक कौशिक	60.00
स्वामी श्रद्धानंद	अशोक कौशिक	60.00
चंद्रशेखर आजाद	सत्य शकुन	60.00
महाराणा प्रताप	सत्य शकुन	60.00
झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	सत्य शकुन	60.00
क्रांतिकारी वासुदेव बलवंत फड़के	सत्य शकुन	75.00
छत्रपति शिवाजी	अशोक कौशिक	60.00
अमर क्रांतिकारी सुखदेव	डॉ. सुभाष रस्तोगी	60.00
क्रांतिकारी भगत सिंह	डॉ. सुभाष रस्तोगी	60.00
देशभक्त संन्यासी विवेकानन्द	डॉ. शत्रुघ्न	60.00
महात्मा हंसराज	अशोक कौशिक	60.00
संतगुरु रविदास	डॉ. बेणीप्रसाद शर्मा	60.00
ऐतिहासिक नारियाँ	डॉ. मुरारि लाल गोयल	60.00
पौराणिक नारियाँ	डॉ. मुरारि लाल गोयल	60.00
क्रांतिकारी महिलाएँ	डॉ. मुरारि लाल गोयल	75.00
भारतीय महापुरुष	तनसुखराम गुप्त	75.00
भारत के महान क्रांतिकारी	विराज	200.00
कहानी आजादी की	श्रीशरण	125.00
पानीपत के तीन घाव	कमल शुक्ल	125.00
गाथा काकोरी की	डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी	65.00
भारत के दुर्धर्ष क्रांतिकारी	डॉ. बी.आर. धर्मेन्द्र	125.00
सुभाषचन्द्र बोस : सीमा के कितने पास	सिद्धेश राय	150.00
ऐसे बने थे लाला लाजपत राय	विनय श्रीवास्तव	125.00
ऐसे बने थे डॉ. भीमराव अम्बेडकर	अरमेन्द्र कुमार	125.00
ऐसे बने थे सरदार वल्लभभाई पटेल	प्रो. मधुसूदन त्रिपाठी	125.00

उपन्यास, कहानी एवं लघुकथा-संग्रह

देशभक्ति की सच्ची कहानियाँ	तनसुखराम गुप्त	60.00
श्रेष्ठ सांस्कृतिक कथाएँ	डॉ. रामलाल वर्मा	60.00
श्रेष्ठ शिक्षाप्रद कथाएँ	डॉ. रामलाल वर्मा	60.00
नारद की कथाएँ	अशोक कौशिक	60.00
इन्द्र की कथाएँ	अशोक कौशिक	60.00
हनुमान की कथाएँ	अशोक कौशिक	60.00
प्रसाद के सम्पूर्ण उपन्यास	जयशंकर प्रसाद	400.00
प्रसाद की सम्पूर्ण कहानियाँ	जयशंकर प्रसाद	400.00
बेगमों की ऐतिहासिक प्रेम कथाएँ	तेजपाल सिंह धामा	100.00
भूली-बिसरी ऐतिहासिक कहानियाँ	तेजपाल सिंह धामा	100.00
महाभारत की कहानियाँ, भाग-1	डॉ. रामचन्द्र वर्मा	125.00
महाभारत की कहानियाँ, भाग-2	डॉ. रामचन्द्र वर्मा	250.00
रात का सफर	पवन पांचाल	250.00
दायित्व	वन्दना सक्सेना	150.00
कथा कलश	संतोष यादव	175.00
बिच्छु	सरोज कृष्ण	175.00
अहसास	नरेन्द्र कुमार गौड़	200.00
लहू का रंग इक जैसा	सुधा जैन अंजुम	200.00
जीवन की पगडंडियाँ	वन्दना सक्सेना	300.00
प्रतिबिम्ब	नरेन्द्र गौड़	150.00
दृष्टि	उर्मि कृष्ण	150.00
फौजी की पत्नी	डॉ. धर्मराज राय	95.00
सती तथा अन्य कहानियाँ	मुंशी प्रेमचंद	200.00
सत्याग्रह तथा अन्य कहानियाँ	मुंशी प्रेमचंद	200.00
दुर्गा का मंदिर तथा अन्य कहानियाँ	मुंशी प्रेमचंद	200.00
बेटों वाली विधवा तथा अन्य कहानियाँ	मुंशी प्रेमचंद	200.00
आचार्य विष्णु गुप्त चाणक्य	राजेश शर्मा	250.00
विवेकानंद की वाणी	पवित्र कुमार शर्मा	75.00
दुखी भारत	लाला लाजपत राय	250.00
लड़की ही दहेज है	कमल शुक्ल	125.00

नाटक, एकांकी

प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी	जयशंकर प्रसाद	400.00
श्रेष्ठ मंचीय एकांकी	राष्ट्रबंधु	100.00
नीलदेवी	भारतेन्दु	40.00
सामाजिक कुरीतियों के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
पर्व/त्योहारों के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
शिक्षाप्रद एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
देशप्रेम के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
खेल संबंधी एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
हास्य-व्यंग्य के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
विज्ञान परक एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
पर्यावरण चेतना के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
सेवाभाव के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
न्याय व अन्याय दर्शाते एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00

कोश, निबंध, व्याकरण

वाक्य-वाक्यांश के लिए एक शब्द का कोश	तनसुखराम गुप्त	300.00
हिन्दी सही लिखिए	डॉ. रामरजपाल द्विवेदी	400.00
अंग्रेजी सही लिखिए	डॉ. रामरजपाल द्विवेदी	200.00
सरल हिन्दी व्याकरण	तनसुखराम गुप्त	200.00
मिडिल संस्कृत व्याकरण	गणेश शर्मा शास्त्री	150.00
अंकुर सचित्र बाल शब्दकोश	अवतार सिंह रावत	250.00
निबंध सौरभ	तनसुखराम गुप्त	300.00

स्वास्थ्य, शिक्षा, गृह विज्ञान

शिशु की स्वास्थ्य रक्षा कैसे करें?	डॉ. रेणु त्रिपाठी	150.00
परीक्षा की तैयारी कैसे करें	श्रीशरण	150.00
स्वादिष्ट व्यंजन कैसे बनाएँ?	अजंलि शरण	125.00
आचार-मुरब्बे और कॅन्फेक्शनरी	अजंलि शरण	125.00

हास्य-व्यंग्य

एम आई राइट	सुधा अंजुम	250.00
जंगल में अमंगल	उर्मि कृष्ण	250.00

धार्मिक, पर्यटन, यात्रा वृत्तांत एवं आध्यात्मिक चिंतन

वैदिक ग्रंथों में भौतिक विज्ञान	तेजपाल सिंह	200.00
भारत के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल	वन्दना सक्सेना	75.00
उत्तराखण्ड के चार धाम	डॉ. शमी शर्मा	60.00
संक्षिप्त रामायण	ज्ञान चन्द	300.00
द्वापर कालीन भारत	कुंज बिहारी जालान	500.00
कालिकालीन भारत	कुंज बिहारी जालान	250.00
तुलसी और मानस	वन्दना सक्सेना	300.00
व्यथित जम्मू कश्मीर	नरेन्द्र सहगल	175.00
भारत में पर्यटन विकास	डॉ. संजय कांत भारद्वाज	150.00
जीवन में आनंद कैसे आएं?	पवित्र कुमार शर्मा	150.00
संभोग से सर्वनाश की ओर	इमरान सिद्दीकी	75.00

गीत, गजल, कविता

चुनी हुई सरस्वती वंदनाएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
देश प्रेम की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
उपयोगी वस्तुओं की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
जीव जन्तुओं की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
शिक्षाप्रद कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
भारतीय गौरव की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
बाल समस्याओं की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
पर्यावरण और विज्ञान की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
हास्य व्यंग्य की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
महापुरुषों की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
खेलों की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
प्रसाद के सम्पूर्ण काव्य	जयशंकर प्रसाद	400.00
स्वरोदय (संगीत सीखिए)	मिथलेश कुमार, मनोज कुमार	150.00
मधुमास की मुस्कान	जितेन्द्र सूद	150.00
मेरी 51 कविताएँ	मास्टर बलबीर सिंह	175.00
बाल गीत	कर्ण सिंह पराशर	150.00
कवितांजली	कविता पंत	200.00

सुखवीर सिंह दलाल

सावरकर, भगतसिंह, आजाद के प्रेरक प्रसंग	75.00
तिलक, पटेल और सुभाष के प्रेरक प्रसंग	60.00
बुद्ध, गाँधी, विवेकानन्द के प्रेरक प्रसंग	60.00
भूलीबिसरी विभूतियों के प्रेरक प्रसंग	75.00
विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिकों के प्रेरक प्रसंग	60.00
विश्वविख्यात महिलाओं के प्रेरक प्रसंग	60.00
पाश्चात्य विभूतियों के प्रेरक प्रसंग	125.00
योद्धाओं के प्रेरक प्रसंग	125.00
महापुरुषों की अमृत वाणी	150.00
वैश्य शिरोमणि	200.00
शोषितों के मसीहा दीनबंधु छोटूराम	100.00
भूली-बिसरी विभूतियाँ	150.00
भारत के प्राचीन संत	100.00
राजनीतिज्ञों के प्रेरक प्रसंग	100.00
संत वाणी	100.00
संतों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
महापुरुषों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
क्रांतिकारियों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
आर्यवीरों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
जाट जाति का प्लूटो : महाराजा सूरजमल	60.00
आर्य समाज के रत्न	100.00
जाट वीरांगनाएँ	60.00
सिख वीरांगनाएँ	60.00
महापुरुषों के हास्य व्यंग्य	75.00
दलित महान्	75.00

स्वामी विवेकानन्द साहित्य

भक्तियोग	60.00
कर्मयोग	95.00
ज्ञानयोग	125.00
विवेकानंद की वाणी	45.00

पुस्तकें भेजने के नियम :-

पुस्तकें VP Pkt. से भेजेंगे! डाकिया मूल्य के अलावा मनीआर्डर फीस पर (बीस रु. पर एक रु.) आपसे लेगा।

300/- से कम पर आदेश पर 50/- रु. का डाक व्यय आपको देना होगा,

300/- से अधिक पर डाक व्यय फ्री होगा।

01/05/2016 से 31/08/2016 तक विशेष कमीशन

500/- पर 10%	+	5% Extra = 15%
1000/- पर 15%	+	10% Extra = 25%
1500/- पर 20%	+	10% Extra = 30%
3000/- पर 20	+	15% Extra = 35%

सूर्य भारती प्रकाशन

2596, नई सड़क, दिल्ली-110006

दूरभाष : 011-23266412, 23285575

(मो.) 0-9891332357, 0-9899832711

email : suryabhartiprakashan@gmail.com

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना